+91 8399054433

basudeo@google.com

Google Book Id: GGKEY:509X0BCCWRD

अनुक्रमणिका

मङ्गलाचरण

वीणा की माँ वादिनी, वाहन हंस विहार।
विद्या दे वागीश्वरी, वारण करो विकार।।

ब्रह्म लोक वासिनी।
दिव्य आभ भासिनी।।
वेद वीण धारिणी।
हंस पे विहारिणी।।

शुभ्र वस्त्र आवृता।
पद्म पे विराजिता।।
दीप्त माँ सरस्वती।
नित्य तू प्रभावती।।

छंद ताल हीन मैं।
भ्रांति के अधीन मैं।।
मन्द बुद्धि को हरो।
काव्य की प्रभा भरो।।

छंद-बद्ध साधना।
काव्य की उपासना।।
मैं सदैव ही करूँ।
भाव से इसे भरूँ।।

मात ये विचार हो।
देश का सुधार हो।।
ज्ञान का प्रसार हो।
नष्ट अंधकार हो।।

शारदे दया करो।
ज्ञान से मुझे भरो।।
काव्य-शक्ति दे मुझे।
दिव्य भक्ति दे मुझे।।

यह रक्ता छंद की स्तुति प्रस्तुत करते हुए हिन्दी के वर्णिक छंदों का दिग्दर्शन कराने वाले "वर्णिक छंद प्रभा" ग्रन्थ को विद्या बुद्धि प्रदायनी माँ सरस्वती के श्री चरणों में आशीर्वाद की प्रार्थना के साथ अर्पित कर रहा हूँ।

भालचन्द्र लम्बोदरा, धूम्रकेतु गजकर्णक।
एकदंत गज-मुख कपिल, गणपति विकट विनायक।।
विघ्न-नाश अरु सुमुख ये, जपे नाम जो द्वादश।
रिद्धि सिद्धि शुभ लाभ से, पाये नर मंगल यश।।

मुक्तामणि छंद में विघ्ननाशक गणपति के द्वादश नामों को स्तुति रूप में प्रस्तुत करते हुए "वर्णिक छंद प्रभा" ग्रन्थ के निर्विघ्न पूर्ण होने की तथा ग्रन्थ से प्रबुद्ध पाठकों का चित्त रंजन करने की मंगलकामना करता हूँ।

सद्‌गुरु-महिमा न्यारी, जग का भेद खोल दे।
वाणी है इतनी प्यारी, कानों में रस घोल दे।।

गुरु से प्राप्त की शिक्षा, संशय दूर भागते।
पाये जो गुरु से दीक्षा, उसके भाग्य जागते।।

गुरु-चरण को धोके, करो रोज उपासना।
ध्यान में उनके खोके, त्यागो समस्त वासना।।

गुरु-द्रोही नहीं होना, गुरु आज्ञा न टालना।
गुरु-विश्वास का खोना, जग-सन्ताप पालना।।

गुरु के गुण जो गाएँ, मधुर वंदना करें।
आशीर्वाद सदा पाएँ, भवसागर से तरें।।

अनुष्टुप छंद में यह गुरु पंच श्लोकी उन समस्त गुरुजनों को अर्पित है जिनसे मुझे आजतक किसी भी रूप में ज्ञान प्राप्त हुआ।

बना शारदे वास, मन मन्दिर में पैठ कर।
विनती करता दास, 'बासुदेव' कर जोड़ कर।।

कृष्ण भाव की रास, थामें मन-रथ बैठ कर।
'बासुदेव' की आस, पूर्ण करें बसुदेव-सुत।।

व्यास देव दें दृष्टि, कार्य करूँ कल्याणकर।
करें भाव की वृष्टि, ग्रन्थ बने ये शोक हर।।

बासुदेव अग्रवाल 'नमन'
तिनसुकिया

प्रस्तावना

हिन्दी छंदों का संसार अत्यंत विशाल है। हिन्दी को अनेकानेक वर्ण वृत्त संस्कृत साहित्य से विरासत में मिले हुये हैं। फिर भक्ति कालीन, रीतिकालीन और अर्वाचीन कवियों ने कल आधारित अनेक नये नये मात्रिक छंदों का निर्माण किया है। समय के साथ साथ ग़ज़ल शैली में उच्चारण के आधार पर वाचिक स्वरूप में छंदों में काव्य सृजन का प्रचलन बढ़ा है। इस प्रकार आज के काव्य सृजकों के पास छंदों की विविधता की कोई कमी नहीं है। आज हमारे पास वर्णिक, मात्रिक और वाचिक रूप में छंदों का विशाल अक्षय कोष है।

मस्तिष्क में एक स्वभाविक सा प्रश्न उठता है कि हिन्दी साहित्य में आखिर इन तीनों स्वरूप के कितने या लगभग कितने छंद होंगे। छंदों के प्रमाणिक ग्रंथ "छंद प्रभाकर" में भानु कवि ने कुल 800 के आसपास वर्णिक और मात्रिक छंदों का सोदाहरण वर्णन किया है और एक मोटे अनुमान के अनुसार लगभग इतने ही छंद और हो सकते हैं जिनका नाम और पूर्ण विधान उपलब्ध हो। इस संख्या की तुलना में छंदों की कुल संख्या का उत्तर शायद अधिकांश साहित्य सृजकों की परिकल्पना से बाहर का हो। छंदों के प्राचीन आचार्यों के पिंगल ग्रंथों में कुल छंदों की गणना के सूत्र दिये हुये हैं।

कोई भी वर्ण या तो लघु होगा या दीर्घ होगा। तो एक वर्णी इकाई के दो भेद या छंद-प्रस्तार हुये। इसी प्रकार दो वर्णी इकाई के इसके दुगुने चार होंगे क्योंकि लघु के पश्चात लघु या दीर्घ जुड़ कर 11 या 12 तथा दीर्घ के पश्चात लघु या दीर्घ जुड़ कर 21 या 22 कुल चार छंद-प्रस्तार होंगे। इसी विधान से त्रिवर्णी गण के चार के दुगुने कुल आठ प्रस्तार संभव है और ये आठ प्रस्तार हमारे गण हैं जिन पर समस्त छंदों का संसार टिका है। इसी अनुसार:-

- 4 वर्ण के 8*2 =16 प्रस्तार
- 5 वर्ण के 16*2 =32 प्रस्तार
- 6 वर्ण के 32*2 =64 प्रस्तार
- 7 वर्ण के 64*2 =128 प्रस्तार
  26 वर्ण के छंदों की प्रस्तार के नियम के अनुसार कुल संख्या होगी 6,71,08,864 प्रस्तार।

  एक वर्णी से लेकर 26 वर्णी तक के छंदों का योग करें तो यह संख्या होगी -
  6,71,08,864*2-2 = 13,42,17,726

26 वर्ण तक के छंद सामान्य छंद में आते हैं तथा इससे अधिक के दण्डक छंद कहलाते हैं जो 48 वर्णों तक के मिलते हैं। उनके प्रस्तार की संख्या को छोड़ दें तो ही ठीक है। यह सब वर्णिक छंदों के प्रस्तार हैं।

इसी प्रकार मात्रिक छंदों के प्रस्तार हैं, जिनकी गणना 1,2,3,5,8,13,21,34 के क्रम में बढती है। मात्रिक छंद 32 मात्रा तक के सामान्य की श्रेणी में आते हैं तथा इससे अधिक के दण्डक की श्रेणी में आते हैं। इस विधान के अनुसार 32 मात्रा के मात्रिक छंदों के प्रस्तार की कुल संख्या 35,24,578 है। एक से 32 मात्रा के मात्रिक छंदों का कुल योग करोड़ से भी अधिक आयेगा।

अब आप स्वयं देखलें कि कुल छंदों की संख्या क्या है, कितने छंदों का नामकरण हो चुका है और सभी छंदों का कभी भी नामकरण संभव है क्या। इन प्रस्तार के नियमों का विश्लेषण करने से यह बात स्पष्ट रूप से सामने आ जाती है कि वर्णिक और मात्रिक छंदों में लघु दीर्घ वर्णों का जो भी क्रम संभव है वह अपने आप में छंद है। छंद कहलाने के लिये किसी विशेष वर्ण-क्रम का होना छंद शास्त्र में कहीं भी निर्दिष्ट नहीं है। लघु दीर्घ का कोई भी क्रम 1 से 26 तक की वर्ण संख्या में सामान्य वर्णिक और 1 से 32 तक की मात्रा संख्या में सामान्य मात्रिक छंद कहलाता है।

अब ऐसा कोई भी क्रम जिसका नामकरण नहीं हुआ है, प्रचलन में नहीं आया है उसे कवि लोग नाम दे कर, यति आदि सुनिश्चित कर, उसमें रचनाएँ लिख कर प्रचलन में लाते हैं और वह यदि प्रचलित हो गया तो कालांतर में नया छंद बन जाता है।

छंद:-

मात्रा या वर्ण की निश्चित संख्या, ह्रस्व स्वर और दीर्घ स्वर की विभिन्न आवृत्ति, यति, गति तथा अन्त्यानुप्रास के नियमों में आबद्ध पद्यात्मक इकाई छंद कहलाता है। ह्रस्व स्वर के उच्चारण में जितना समय लगता है दीर्घ स्वर के उच्चारण में उसका दुगुना समय लगता है। इसी उच्चारण की विभिन्नता से अनेकानेक छंद का सृजन होता है जिनकी अपनी अपनी लय होती है। छंदों में ह्रस्व स्वर की एक मात्रा गिनी जाती है जिसे लघु के नाम से जाना जाता है। इसे 1 की संख्या से भी प्रकट किया जाता है। दीर्घ स्वर की दो मात्रा होती है जिसे गुरु के नाम से जाना जाता है और 2 की संख्या से भी प्रकट किया जाता है।

उपरोक्त नियमों की विभिन्नता से अनेक लय का निर्माण होता है, जिनके आधार पर अनेकानेक छंद का निर्माण होता है। पदांत में केवल एक लघु की वृद्धि कर देने से ही छंद की लय, गति में अंतर आ जाता है और वह छंद का एक अलग भेद हो जाता है। संरचना, लक्षण और किसी छंद में काव्य सृजन के नियमों के आधार पर छंदों को तीन वर्गों में रखा जा सकता है।

1- वर्णिक छंद:- वर्णिक छंद उसे कहा जाता है जिसके प्रत्येक पद में वर्णों का क्रम तथा वर्णों की संख्या नियत रहती है। जब लघु गुरु का क्रम और उनकी संख्या निश्चित है तो मात्रा स्वयंमेव सुनिश्चित है। वर्णिक छंद की रचना में उस के वर्णों के क्रम का सम्यक ज्ञान और पद के मध्य की यति या यतियों का ज्ञान होना ही पर्याप्त है। वर्णिक छंदो में रचना करने के लिए ह्रस्व या दीर्घ मात्रा के अनुसार केवल शब्द चयन आवश्यक है। जैसे - मेरी "सुमति छंद" की रचना का एक उदाहरण देखें जिसका वर्ण विन्यास- 111 212 111 122 है।

"प्रखर भाल पे हिमगिरि न्यारा।
बहत वक्ष पे सुरसरि धारा।।
पद पखारता जलनिधि खारा।
अनुपमेय भारत यह प्यारा।।"

रचना के हर चरण में ठीक 12 वर्ण हैं। वर्णिक छंदों में छंद में प्रयुक्त वर्णों के ह्रस्व दीर्घ के क्रम से कहीं भी च्युत नहीं हुआ जा सकता।

2- मात्रिक छंद:- मात्रिक छंद के पद में वर्णों की संख्या और वर्णों का क्रम निर्धारित नहीं रहता है परंतु मात्रा की संख्या निर्धारित रहती है। फिर भी हिन्दी में वर्णिक छंदों की अपेक्षा मात्रिक छंदों का प्रचलन अधिक है। मात्रिक छंदों की लय भी बहुत मधुर तथा लोचदार होती है। यह लय केवल मात्राओं के बंधन से नहीं आती बल्कि उन मात्राओं को भी एक निश्चित क्रम में सजाने से प्राप्त होती है। मात्राओं के इस निश्चित क्रम का आधार है कल संयोजन। अधिकांश छंद समकल अर्थात द्विकल, चतुष्कल, षटकल, अठकल आदि पर आधारित रहते हैं परन्तु कई छंद में केवल विषम कल भी रहते हैं या समकलों के मध्य विषम कलों का भी समावेश रहता है। कलों के अतिरिक्त कई मात्रिक छंद में गणों का प्रयोग भी रहता है या कई छंदों के पदांत में वर्णिक रूप में गण रहता है। मेरी एक चौपाई का उदाहरण देखें जिसके प्रत्येक चरण में 16 मात्रा आवश्यक है।

"भोले की महिमा है न्यारी।
औघड़ दानी भव-भय हारी।।
शंकर काशी के तुम नाथा।
रखो शीश पर हे प्रभु हाथा।।"

उदाहरण के चरणों में वर्ण संख्या क्रमशः 9, 11, 10, 11 है। पर मात्रा हर चरण में 16 एक समान है। और लय सधी हुई है।

3- वाचिक स्वरूप:- वर्तमान में हिन्दी में वाचिक स्वरूप में सृजन करने का प्रचलन तेजी से बढ़ता जा रहा है। वाचिक का स्वरूप तो वर्णिक है पर इसके सृजन में न तो वर्णों की संख्या का बंधन है और न ही मात्राओं का। इसमें उच्चारण की प्रमुखता है और इस आधार पर गुरु को दो लघु में भी तोड़ा जा सकता है और कहीं कहीं गुरु वर्ण को लघु रूप में भी लिया जा सकता है। वाचिक में रचे गये मेरे एक मुक्तक का उदाहरण जिसकी मापनी 221 1222, 221 1222 है।

"पहचान ले' नारी तू, ताकत जो' छिपी तुझ में,
कारीगरी' उसकी जो, सब ही तो' सजी तुझ में,
मंजिल न को'ई ऐसी, तू पा न सके जिसको,
भगवान दिखे उसमें, ममता जो' बसी तुझ में।"

रचना में चिन्हित कई स्थान पर दीर्घाक्षरों का लघुवत् उच्चारण है।

हिन्दी के छंद शास्त्र का संक्षिप्त परिचय कराने के पश्चात मैं मेरे प्रथम ग्रन्थ "वर्णिक छंद प्रभा" से आपका परिचय करा दूँ जो इस समय आपके समक्ष है। इस ग्रन्थ में हिन्दी भाषा की अधिकांश प्रचलित वर्णिक छंदों की मेरी रचनाएँ संग्रहित की गयी हैं। साथ ही संबंधित छंद का पूर्ण विधान भी दिया गया है जिससे जिज्ञासु पाठकों को छंदों के विधान की पूर्ण जानकारी प्राप्त हो सके। मेरा यह प्रयास आज के रचनाकारों, समालोचकों और प्रबुद्ध पाठकों के लिये कुछ भी सहायक सिद्ध होता है, उनका चित्त रंजन करने वाला होता है, उन्हें कुछ नवीनता प्रदान करता है तो मैं इस प्रयास को सार्थक समझूँगा।

जहाँ तक मुझसे संभव हो सका है छंदों के मान्य विधान को ही प्रस्तुत ग्रन्थ में दिया गया है फिर भी कोई त्रुटि या मतांतर हो तो पाठकगण मुझे संबोधित करने का अनुग्रह करें।

बासुदेव अग्रवाल 'नमन'
तिनसुकिया (असम)

बासुदेव अग्रवाल 'नमन' साहित्यिक परिचय

जन्म दिन - 28 अगस्त, 1952;

रुचि - काव्य की हर विधा में सृजन करना। हिन्दी साहित्य की हर प्रचलित छंद, गीत, नवगीत, हाइकु, सेदोका, वर्ण पिरामिड, गज़ल, मुक्तक, सवैया, घनाक्षरी इत्यादि में रचना लिखना। हिन्दी साहित्य की पारंपरिक छंदों में विशेष रुचि है और मात्रिक एवं वर्णिक स्वरूप की लगभग सभी प्रचलित छंदों में काव्य सृजन में सतत संलग्न हूँ।

परिचय - वर्तमान में मैं असम प्रदेश के तिनसुकिया नगर में हूँ। whatsapp के कई ग्रुप जैसे -

- ★ साहित्य संगम संस्थान,
- ★ अनन्त आकाश हिन्दी साहित्य संसद,
- ★ काव्य धारा,
- ★ रचनाकार,
- ★ जिज्ञासा काव्य मंच,
- ★ काव्य कूंज,
- ★ कविता बहार,

आदि से जुड़ा हुआ हूँ जिससे साहित्यिक कृतियों एवम् विचारों का आदान प्रदान गणमान्य साहित्यकारों से होता रहता है। इसके अतिरिक्त हिन्दी साहित्य की अधिकांश प्रतिष्ठित वेब साइट में मेरी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं।

सम्मान- मेरी रचनाएँ देश के सम्मानित समाचारपत्रों में नियमित रूप से प्रकाशित होती रहती हैं। हिन्दी साहित्य से जुड़े विभिन्न ग्रूप और संस्थानों से कई अलंकरण और प्रसस्ति पत्र नियमित प्राप्त होते रहते हैं।

पृष्ठभूमि:- हमारा परिवार बहुत ही धार्मिक प्रवृति का था और हमारे घर में गीताप्रेस से प्रकाशित पुस्तकों की अमूल्य धरोहर सञ्चित थी। मैंने जब से होश सम्भाला पुस्तकों के प्रति मेरा प्रेम एक दीवानगी की हद तक का था। जीवन की बहुत ही प्रारम्भिक अवस्था में उन पुस्तकों के पढ़ने से मेरे मन में अपने धर्म और संस्कृति के प्रति एक अगाध आस्था और विश्वास प्रस्फुटित हो गया। 13-14 वर्ष की उम्र तक ही मुझे रामायण, महाभारत, भागवत तथा अन्य कई पुराण और भक्तमाल जैसे ग्रन्थों को पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

कक्षा दशम तक आते आते मैं हिन्दी साहित्य से बहुत कुछ परिचित हो गया। हमारे पाठ्यक्रम में जितने महान कवियों की रचनाएँ थी उन कवियों का जीवन चरित्र और उनकी प्रमुख कृतियों को पढ़ने का मुझे अवसर मिला। इन सबसे मैं बहुत प्रभावित हुआ और दशम कक्षा यानी 1971 से ही मैंने कविताएँ लिखनी प्रारम्भ कर दी। मेरी दशवीं कक्षा की लिखी एक कविता की कुछ प्रारंभिक पंक्तियाँ।

"भारत गौरव"

जय भारत जय पावनि गंगे,
जय गिरिराज हिमालय;
आज विश्व के श्रवणों में,
गूँजे तेरी पावन लय ।
नमो नमो हे जगद्गुरु,
तेरी इस पुण्य धरा को;
गुंजित करना ही सुझे,
तेरा यश इन अधरों को ।।1।।

उत्तर में नगराज हिमालय,
तेरा शीश सजाए;
दक्षिण में पावन रत्नाकर,
तेरे चरण धुलाए ।
खेतों की हरियाली तुझको,
हरित वस्त्र पहनाए;
सरिता और शैल उस में,
मनभावन सुमन सजाए ।।2।।

कालेज की पढ़ाई के दौरान भी मेरा कविता लेखन बहुत ही छुटपुट रूप में जारी रहा। कालेज से स्नातक होते ही मैं अपने मातुलों द्वारा व्यापार में लगा दिया गया। 1979 में ही मेरा विवाह हो गया और लेखन के काम में एक बड़ा अंतराल आ गया और काव्य सृजन का काम समाप्त ही हो गया।

पुन: मार्च 2016 में मैं हिन्दी साहित्यकारों की अंतरराष्ट्रीय संस्था नारायणी साहित्य अकादमी से जुड़ गया। हमारी संस्था की नियमित रूप से हर महीने काव्य गोष्ठी होती है और मुझे विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं के समक्ष नारायणी साहित्य अकादमी के सौजन्य से कविता पाठ करने का अवसर मिलता रहता है।

साहित्यकारों की इस संस्था के मनपसन्द वातावरण में आते ही मेरी वह कहीं खो सी गई रुचि पुनः प्रस्फुटित होने लगी और लगभग 37 साल के लम्बे अंतराल के पश्चात मैं पुनः काव्य सृजन से जुड़ गया।

2016 में मैं साहित्य संगम से भी जुड़ गया था और साहित्य के इस विस्तृत नभ में आते ही मेरी साहित्य साधना को मानो विशाल पंख मिल गए और मेरी उन्मुक्त उड़ान ठहरने का नाम ही न लेने लगी। मार्च 2016 में मैंने पुनः कलम संभाली और 3-4 महीनों में ही अंतर्जाल में हिन्दी कविता लेखन और कविताओं की विधाओं से संबंधित जो जानकारी हासिल हो सकती थी वह मैंने खंगाल डाली। जो भी विधा मुझे मिली उस पर मैंने कलम चलाने का अवश्य प्रयास किया। उसके फलस्वरूप आज मैं हिन्दी साहित्य की हर प्रचलित छंद, गीत, नवगीत, हाइकु, सेदोका, वर्ण पिरामिड, ग़ज़ल, मुक्तक, सवैया, घनाक्षरी इत्यादि में काव्य सृजन कर रहा हूँ।

असम के दैनिक समाचार पत्रों में मेरी रचनाएँ नियमित रूप से प्रकाशित हो रही हैं। हिन्दी साहित्य से जुड़ी कई अंतर्जाल पर भी मेरी रचनाएँ संग्रहित हो रही हैं।

मेरा खुद का ब्लॉग जिसमें मेरी रचनाएँ संग्रहित हो रही हैं:-

https://nayekavi.blogspot.com

छंदों को समर्पित मेरी वेब साइट:-

https://www.kavikul.com

छंदों को समर्पित मेरा फेसबुक पेज:-

https://www.facebook.com/chhandsarovar/

अनुष्टुप छंद "गुरु पंचश्लोकी"

सद्‌गुरु-महिमा न्यारी, जग का भेद खोल दे।
वाणी है इतनी प्यारी, कानों में रस घोल दे।।

गुरु से प्राप्त की शिक्षा, संशय दूर भागते।
पाये जो गुरु से दीक्षा, उसके भाग्य जागते।।

गुरु-चरण को धोके, करो रोज उपासना।
ध्यान में उनके खोके, त्यागो समस्त वासना।।

गुरु-द्रोही नहीं होना, गुरु आज्ञा न टालना।
गुरु-विश्वास का खोना, जग-सन्ताप पालना।।

गुरु के गुण जो गाएं, मधुर वंदना करें।
आशीर्वाद सदा पाएं, भवसागर से तरें।।

अनुष्टुप छंद विधान -

अनुष्टुप छंद अर्द्ध समवृत्त है । यह द्विपदी छंद है जिसके पद में दो चरण होते हैं। इस के प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं । पहले चार वर्ण किसी भी मात्रा के हो सकते हैं । पाँचवाँ लघु और छठा वर्ण सदैव गुरु होता है । विषम चरणों (1,3) में सातवाँ वर्ण गुरु और सम चरणों (2,4) में लघु होता है। आठवाँ वर्ण संस्कृत में तो लघु या गुरु कुछ भी हो सकता है। संस्कृत में छंद के चरण का अंतिम वर्ण लघु होते हुये भी दीर्घ उच्चरित होता है जबकि हिन्दी में यह सुविधा नहीं है। अतः हिन्दी में आठवाँ वर्ण सदैव दीर्घ ही होता है।

(1) × × × × I S S S, (2) × × × × I S I S
(3) × × × × I S S S, (4) × × × × I S I S

उपरोक्त वर्ण विन्यास के अनुसार चार चरणों का एक छंद होता है। सम चरण (2, 4) समतुकांत होने चाहिए। रोचकता बढाने के लिए चाहें तो विषम चरण (1, 3) भी समतुकांत कर सकते हैं पर आवश्यक नहीं।

गुरु की गरिमा भारी, उसे नहीं बिगाड़ना।
हरती विपदा सारी, हितकारी प्रताड़ना।।

असबंधा छंद "हिन्दी गौरव"

भाषा हिन्दी गौरव बड़पन की दाता।
देवी-भाषा संस्कृत मृदु इसकी माता।।
हिन्दी प्यारी पावन शतदल वृन्दा सी।
साजे हिन्दी विश्व पटल पर चन्दा सी।।

हिन्दी भावों की मधुरिम परिभाषा है।
ये जाये आगे बस यह अभिलाषा है।।
त्यागें अंग्रेजी यह समझ बिमारी है।
ओजस्वी भाषा खुद जब कि हमारी है।।

गोसाँई ने रामचरित इस में राची।
मीरा बाँधे घूँघर पग इस में नाची।।
सूरा ने गाये सब पद इस में प्यारे।
ऐसी थाती पा कर हम सब से न्यारे।।

शोभा पाता भारत जग मँह हिन्दी से।
जैसे नारी भाल सजत यक बिन्दी से।।
हिन्दी माँ को मान जगत भर में देवें।
ये प्यारी भाषा हम सब मन से सेवें।।

असबंधा छंद विधान -

"मातानासागाग" रचित 'असबंधा' है।
ये तो प्यारी छंद सरस मधु गंधा है।।

"मातानासागाग" = मगण तगण नगण सगण + गुरु गुरु।
222 221 111 112 22 = 14 वर्ण का वर्णिक छंद। दो दो या चारों चरण समतुकांत।

असंबाधा छंद के रूप में भी इस छंद का परिचय प्राप्त होता है।

असंबाधा छंद का वर्ण विन्यास - 22222, 111*2 222

इंदिरा छंद / राजहंसी छंद "पथिक"

तमस की गयी ये विभावरी।
हृदय-सारिका आज बावरी।।
वह उड़ान उन्मुक्त है भरे।
खग प्रसुप्त जो गान वो करे।।

अरुणिमा रही छा सभी दिशा।
खिल उठा सवेरा, गयी निशा।।
सतत कर्म में लीन हो पथी।
पथ प्रतीक्ष तेरे महारथी।।

अगर भूत तेरा डरावना।
पर भविष्य आगे लुभावना।।
रह न तू दुखों को विचारते।
बढ़ सदैव राहें सँवारते।।

कर कभी न स्वीकार हीनता।
जगत को दिखा तू न दीनता।।
सजग तू बना ले शरीर को।
'नमन' विश्व दे कर्म वीर को।।

इंदिरा छंद / राजहंसी छंद विधान -

इंदिरा छंद जो कि राजहंसी छंद के नाम से भी जाना जाता है, 11 वर्ण प्रति चरण का वर्णिक छंद है।

"नररलाग" से छंद लो तिरा।
युगल 'राजहंसी' व 'इंदिरा'।।

"नररलाग" = नगण रगण रगण + लघु गुरु
111 212 212 12 = 11 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण, दो-दो चरण समतुकांत।

इन्द्रवज्रा छंद / उपेन्द्रवज्रा छंद / उपजाति छंद "शिवेंद्रवज्रा स्तुति"

परहित कर विषपान, महादेव जग के बने।
सुर नर मुनि गा गान, चरण वंदना नित करें।।

माथ नवा जयकार, मधुर स्तोत्र गा जो करें।
भरें सदा भंडार, औघड़ दानी कर कृपा।।

कैलाश वासी त्रिपुरादि नाशी।
संसार शासी तव धाम काशी।
नन्दी सवारी विष कंठ धारी।
कल्याणकारी शिव दुःख हारी।।१।।

ज्यों पूर्णमासी तव सौम्य हाँसी।
जो हैं विलासी उन से उदासी।
भार्या तुम्हारी गिरिजा दुलारी।
कल्याणकारी शिव दुःख हारी।।२।।

जो भक्त सेवे फल पुष्प देवे।
वाँ की तु देवे भव-नाव खेवे।
दिव्यावतारी भव बाध टारी।
कल्याणकारी शिव दुःख हारी।।३।।

धूनी जगावे जल को चढ़ावे।
जो भक्त ध्यावे उन को तु भावे।
आँखें अँगारी गल सर्प धारी।
कल्याणकारी शिव दुःख हारी।।४।।

माथा नवाते तुझको रिझाते।
जो धाम आते उन को सुहाते।
जो हैं दुखारी उनके सुखारी।
कल्याणकारी शिव दुःख हारी।।५।।

मैं हूँ विकारी तु विराग धारी।
मैं व्याभिचारी प्रभु काम मारी।
मैं जन्मधारी तु स्वयं प्रसारी।
कल्याणकारी शिव दुःख हारी।।६।।

द्वारे तिहारे दुखिया पुकारे।
सन्ताप सारे हर लो हमारे।
झोली उन्हारी भरते उदारी।
कल्याणकारी शिव दुःख हारी।।७।।

सृष्टी नियंता सुत एकदंता।
शोभा बखंता ऋषि साधु संता।
तु अर्ध नारी डमरू मदारी।
पिनाक धारी शिव दुःख हारी।८।।

जा की उजारी जग ने दुआरी।
वा की निखारी प्रभुने अटारी।
कृपा तिहारी उन पे तु डारी।
पिनाक धारी शिव दुःख हारी।९।।

पुकार मोरी सुन ओ अघोरी।
हे भंगखोरी भर दो तिजोरी।
माँगे भिखारी रख आस भारी।
पिनाक धारी शिव दुःख हारी।।१०।।

भभूत अंगा तव भाल गंगा।
गणादि संगा रहते मलंगा।
श्मशान चारी सुर-काज सारी।
पिनाक धारी शिव दुःख हारी।।११।।

नवाय माथा रचुँ दिव्य गाथा।
महेश नाथा रख शीश हाथा।
त्रिनेत्र थारी महिमा अपारी।
पिनाक धारी शिव दुःख हारी।।१२।।

करके तांडव नृत्य, प्रलय जग में शिव करते।
विपदाएँ भव-ताप, भक्त जन का भी हरते।
देवों के भी देव, सदा रीझो थोड़े में।
करो हृदय नित वास, शैलजा सँग जोड़े में।
रच "शिवेंद्रवज्रा" रखे, शिव चरणों में 'बासु' कवि।
जो गावें उनकी रहे, नित महेश-चित में छवि।।

(छंद १ से ७ इन्द्रवज्रा छंद में, ८ से १० उपजाति छंद में और ११ व १२ उपेन्द्रवज्रा छंद में।

इन्द्रवज्रा छंद विधान

"ताता जगेगा" यदि सूत्र राचो।
तो 'इन्द्रवज्रा' शुभ छंद पाओ।

"ताता जगेगा" = तगण, तगण, जगण, गुरु, गुरु।

221 221 121 22 = 11 वर्ण का वर्णिक छंद।

उपेन्द्रवज्रा छंद विधान

"जता जगेगा" यदि सूत्र राचो।
'उपेन्द्रवज्रा' तब छंद पाओ।

"जता जगेगा" = जगण, तगण, जगण, गुरु, गुरु

121 221 121 22 = 11 वर्ण का वर्णिक छंद।

उपजाति छंद विधान

उपेन्द्रवज्रा अरु इन्द्रवज्रा।
दोनों मिले तो 'उपजाति' छंदा।

चार चरणों के छंद में कोई चरण इन्द्रवज्रा का हो और कोई उपेन्द्रवज्रा का तो वह 'उपजाति' छंद के अंतर्गत आता है।

कनक मंजरी छंद "गोपी विरह"

तन-मन छीन किये अति पागल,
हे मधुसूदन तू सुध ले।
श्रवणन गूँज रही मुरली वह,
जो हम लीं सुन कूँज तले।।
अब तक खो उस ही धुन में हम,
ढूंढ रहीं ब्रज की गलियाँ।
सब कुछ जानत हो तब दर्शन,
देय खिला मुरझी कलियाँ ।।१।।

द्रुम अरु कूँज लता सह बातिन,
में हर गोपिण पूछ रही।
नटखट श्याम सखा बिन जीवित,
क्यों अब लौं, निगलै न मही।।
विहग रहे उड़ छू कर अम्बर,
गाय रँभाय रहीं सब हैं।
हरित सभी ब्रज के तुम पादप,
बंजर तो हम ही अब हैं ।।२।।

मधुकर एक लखी तब गोपिन,
बोल पड़ीं फिर वे उससे।
भ्रमर कहो किस कारण गूँजन,
से बतियावत हो किससे।।
इन परमार्थ भरी कटु बातन,
से कछु काम नहीं अब रे।
रख अपने तक ज्ञान सभी यह,
भूल गईं सुध ही जब रे ।।३।।

मधुकर श्यामल मोहन श्यामल,
तू न कहीं छलिया वह ही।
कलियन रूप चखे नित नूतन,
है गुण श्याम समान वही।।
परखन प्रीत हमार यहाँ यदि,
रूप मनोहर वो धर लें।
यदि न कहो उनसे झट जा कर,
दर्श दिखा दुख वे हर लें ।।४।।

कनक मंजरी छंद विधान

प्रथम रखें लघु चार तबै षट "भा" गण संग व 'गा' रख लें।
सु'कनक मंजरि' छंद रचें यति तेरह वर्ण तथा दश पे।।

लघु चार तबै षट "भा" गण संग व 'गा' = 4 लघु + 6 भगण (211) + 1 गुरु।

1111+ 211+ 211+ 211, 211+ 211+ 211+ 2 = 23 वर्ण का वर्णिक छंद। चार पद, दो-दो पद समतुकांत।

शैलसुता छंद विधान

इसी छंद में जब यति की बाध्यता न हो तो यही छंद "शैलसुता छंद" कहलाता है।

कलाधर छंद "योग साधना"

दिव्य ज्ञान योग का हिरण्यगर्भ से प्रदत्त,
ये सनातनी परंपरा जिसे निभाइए।
आर्ष-देन ये महान जो रखे शरीर स्वस्थ्य,
धार देह वीर्यवान और तुष्ट राखिए।
शुद्ध भावना व ओजवान पा विचार आप,
चित्त की मलीनता व दीनता हटाइए।
नित्य-नेम का बना विशिष्ट एक अंग योग।
सृष्टि की विभूतियाँ समस्त आप पाइए।।

मोह लोभ काम क्रोध वासना समस्त त्याग,
पाप भोग को मनोव्यथा बना निकालिए।
ज्ञान ध्यान दान को सजाय रोम रोम मध्य,
ध्यान ध्येय पे रखें तटस्थ हो बिराजिए।।
ईश-भक्ति चित्त राख दृष्टि भोंह मध्य साध,
पूर्ण निष्ठ ओम जाप मौन धार कीजिए।
वृत्तियाँ समस्त छोड़ चित्त को अधीन राख,
योग नित्य धार रोग-त्रास को मिटाइए।।

कलाधर छंद विधान

पाँच बार "राज" पे "गुरो" 'कलाधरं' सुछंद।
षोडशं व पक्ष पे विराम आप राखिए।।
ये घनाक्षरी समान छंद है प्रवाहमान।
राचिये इसे सभी पियूष-धार चाखिये।।

पाँच बार "राज" पे "गुरो" = (रगण+जगण)*5 + गुरु। = (212 121)*5+2

अर्थात गुरु लघु की 15 आवृत्ति के बाद गुरु। = 21x15 + 2 तथा 16 और पक्ष =15 पर यति।

यह विशुद्ध घनाक्षरी है अतः कलाधर घनाक्षरी भी कही जाती है।

कामदा छंद / पंक्तिका छंद "देश की हालत"

स्वार्थ में सनी राजनीति है।
वोट नोट से आज प्रीति है।।
देश खा रहे हैं सभी यहाँ।
दौर लूट का देखिये जहाँ।।

त्रस्त आज आतंक से सभी।
देश की न थी ये दशा कभी।।
देखिये जहाँ रक्त-धार है।
लोकतंत्र भी शर्मसार है।।

शील नारियाँ हैं लुटा रही।
लाज से मरी जा रही मही।।
अर्थ पाँव पे जो टिकी हुई।
न्याय की व्यवस्था बिकी हुई।।

धूर्त चोर नेता यहाँ हुये।
कीमतें सभी आसमाँ छुये।।
देश की दशा है बड़ी बुरी।
वृत्ति छा गयी आज आसुरी।।

कामदा छंद / पंक्तिका छंद विधान -

कामदा छंद जो कि पंक्तिका छंद के नाम से भी जाना जाता है, १० वर्ण प्रति चरण का वर्णिक छंद है।

"रायजाग" ये वर्ण राखते।
छंद 'कामदा' धीर चाखते।।

"रायजाग" = रगण यगण जगण गुरु।

(212 122 121 2) = 10 वर्ण प्रति चरण, 4 चरण, दो दो सम तुकान्त।

कुसुमसमुदिता छंद "शृंगार वर्णन"

गौर वरण शशि वदना।
वक्र नयन पिक रसना।।
केहरि कटि अति तिरछी।
देत चुभन बन बरछी।।

बंकिम चितवन मन को।
हास्य मधुर इस तन को।।
व्याकुल रह रह करता।
चैन सकल यह हरता।।

यौवन उमड़ विहँसता।
ठीक हृदय मँह धँसता।।
रूप निरख मन भटका।
कुंतल लट पर अटका।।

तंग वसन तन चिपटे।
ज्यों फणिधर तरु लिपटे।।
हंस लजत लख चलना।
चित्त-हरण यह ललना।।

कुसुमसमुदिता छंद विधान -

"भाननगु" गणन रचिता।
छंदस 'कुसुमसमुदिता'।।

"भाननगु" = भगण नगण नगण गुरु

(211 111 111 2) = 10 वर्ण का वर्णिक छंद, 4 चरण, दो-दो चरण समतुकांत।

गजपति छंद "नव उड़ान"

पर प्रसार करके।
नव उड़ान भर के।।
विहग झूम तुम लो।
गगन चूम तुम लो।।

सजगता अमित हो।
हृदय शौर्य नित हो।।
सुदृढ़ता अटल हो।
मुख प्रभा प्रबल हो।।

नभ असीम बिखरा।
हर प्रकार निखरा।।
तुम जरा न रुकना।
अरु कभी न झुकना।।

नयन लक्ष्य पर हो।
न मन स्वल्प डर हो।।
विजित विश्व कर ले।
गगन अंक भर ले।।

गजपति छंद विधान -

"नभलगा" गण रखो।
'गजपतिम्' रस चखो।।

"नभलगा" = नगण भगण लघु गुरु।

(111 211 1 2) = 8 वर्ण का वर्णिक छंद, 4 चरण, दो-दो चरण समतुकांत।

गाथ छंद "वृक्ष-पीड़ा"

वृक्ष जीवन देते हैं।
नाहिँ ये कुछ लेते हैं।।
काट व्यर्थ इन्हें देते।
आह क्यों इनकी लेते।।

पेड़ को मत यूँ काटो।
भू न यूँ इन से पाटो।।
पेड़ जीवन के दाता।
जोड़ लो इन से नाता।।

वृक्ष दुःख सदा बाँटे।
ये न हैं पथ के काँटे।।
मानवों ठहरो थोड़ा।
क्यों इन्हें समझो रोड़ा।।

मूकता इनकी पीड़ा।
काटता तु उठा बीड़ा।।
बुद्धि में जितने आगे।
स्वार्थ में उतने पागे।।

गाथ छंद विधान -

सूत्र राच "रसोगागा"।
'गाथ' छंद मिले भागा।।

"रसोगागा" = रगण, सगण, गुरु गुरु

212 112 22 = 8 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण, दो दो समतुकांत।

गिरिधारी छंद "दृढ़ संकल्प"

खुद पे रख यदि विश्वास चलो।
जग को जिस विध चाहो बदलो।।
निज पे अटल भरोसा जिसका।
यश गायन जग में हो उसका।।

मत राख जगत पे आस कभी।
फिर देख बनत हैं काम सभी।।
जग-आश्रय कब स्थायी रहता।
डिगता जब मन पीड़ा सहता।।

मन-चाह गगन के छोर छुए।
नहिँ पूर्ण हृदय की आस हुए।।
मन कार्य करन में नाँहि लगे।
अरु कर्म-विरति के भाव जगे।।

हितकारक निज का संबल है।
पर-आश्रय नित ही दुर्बल है।।
मन में दृढ़ यदि संकल्प रहे।
सब वैभव सुख की धार बहे।।

गिरिधारी छंद विधान -

"सनयास" अगर तू सूत्र रखे।
तब छंदस 'गिरिधारी' हरखे।।

"सनयास" = सगण, नगण, यगण, सगण।

112 111 122 112 = 12 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण, दो दो समतुकांत।

घनश्याम छंद "दाम्पत्य सुख"

विवाह पवित्र, बन्धन है पर बोझ नहीं।
रहें यदि निष्ठ, तो सुख के सब स्वाद यहीं।।
चलूँ नित साथ, हाथ मिला कर प्रीतम से।
रखूँ मन आस, काम करूँ सब संयम से।।

कभी रहती न, स्वारथ के बस हो कर के।
समर्पण भाव, नित्य रखूँ मन में धर के।।
परंतु सदैव, धार स्वतंत्र विचार रहूँ।
जरा नहिँ धौंस, दर्प भरा अधिकार सहूँ।।

सजा घर द्वार, रोज पका मधु व्यंजन मैं।
लखूँ फिर बाट, नैन लगा कर अंजन मैं।।
सदा मन माँहि, प्रीत सजाय असीम रखूँ।
यही रख मन्त्र, मैं रस धार सदैव चखूँ।।

बसा नव आस, जीवन के सुख भोग रही।
निरर्थक स्वप्न, की भ्रम-डोर कभी न गही।।
करूँ नहिँ रार, साजन का मन जीत जिऊँ।
यही सब धार, जीवन की सुख-धार पिऊँ।।

घनश्याम छंद विधान -

"जजाभभभाग", में यति छै, दश वर्ण रखो।
रचो 'घनश्याम', छंद अतीव ललाम चखो।।

"जजाभभभाग" = जगण जगण भगण भगण भगण गुरु।

121 121, 211 211 211 2 = 16 वर्ण का वर्णिक छंद। यति 6 और 10 वर्णों पर, 4 पद, 2-2 पद समतुकांत।

चंचला छंद "बसंत वर्णन"

छा गयी सुहावनी बसंत की छटा अपार।
झूम के बसंत की तरंग में खिली बहार।।
कूँज फूल से भरे तड़ाग में खिले सरोज।
पुष्प सेज को सजा किसे बुला रहा मनोज।।

धार पीत चूनड़ी समस्त क्षेत्र हैं विभोर।
झूमते बयार संग ज्यों समुद्र में हिलोर।।
यूँ लगे कि मस्त वायु छेड़ घूँघटा उठाय।
भू नवीन व्याहता समान ग्रीव को झुकाय।।

कोयली सुना रही सुरम्य गीत कूक कूक।
प्रेम-दग्ध नार में रही उठाय मूक हूक।।
बैंगनी, गुलाब, लाल यूँ भए पलास आज।
आ गया बसंत फाग खेलने सजाय साज।।

आम्र वृक्ष स्वर्ण बौर से लदे झुके लजाय।
अप्रतीम ये बसंत की छटा रही लुभाय।।
हास का विलास का सुरम्य भाव दे बसंत।
काव्य-विज्ञ को प्रदान कल्पना करे अनंत।।

चंचला छंद विधान -

"राजराजराल" वर्ण षोडसी रखो सजाय।
'चंचला' सुछंद राच आप लें हमें लुभाय।।

"राजराजराल" = रगण जगण रगण जगण रगण लघु।

21×8 = 16 वर्ण प्रति चरण का वर्णिक छंद। 4 चरण, 2-2 चरण समतुकांत।

चन्द्रिका छंद "वचन सार"

सुन कर पहले, कथ्य को तोलना।
समझ कर तभी, शब्द को बोलना।।
गुण यह जग में, बात से मान दे।
सरस अमिय का, सर्वदा पान दे।।

मधुरिम कथनी, प्रेम की जीत दे।
कटु वचन वहीं, तोड़ ही प्रीत दे।।
वचन पर चले, साख व्यापार की।
कथन पर टिकी, रीत संसार की।।

मुख अगर खुले, सत्य वाणी कहें।
असत वचन से, दूर कोसों रहें।।
जग-मन हरता, सत्यवादी सदा।
यह बहुत बड़ी, मानवी संपदा।।

छल वचन करे, भग्न विश्वास को।
कपट हृदय तो, प्राप्त हो नाश को।।
व्रण कटु वच का, ठीक होता नहीं।
मधु बयन जहाँ, हर्ष सारा वहीं।।

चन्द्रिका छंद विधान -

"ननततु अरु गा", 'चन्द्रिका' राचते।
यति सत अरु छै, छंद को साजते।।

"ननततु अरु गा" = नगण नगण तगण तगण गुरु

111 111 2,21 221 2 = 13 वर्ण, 7, 6 यति। 13 वर्ण प्रति पद का वर्णिक छंद। 4 पद, दो-दो पद समतुकांत।

चामर छंद "मुरलीधर छवि"

गोप-नार संग नन्दलालजू बिराजते।
मोर पंख माथ पीत वस्त्र गात साजते।।
रास के सुरम्य गीत गौ रँभा रँभा कहे।
कोकिला मयूर कीर कूक गान गा रहे।।

श्याम पैर गूँथ के कदंब के तले खड़े।
नील आभ रत्न बाहु-बंद में कई जड़े।।
काछनी मृगेन्द्र लंक में लगे लुभावनी।
श्वेत पुष्प माल कंठ में बड़ी सुहावनी।।

शारदीय चन्द्र की प्रशस्त शुभ्र चांदनी।
दिग्दिगन्त में बिखेरती प्रभा प्रभावनी।।
पुष्प भार से लदे निकुंज भूमि छा रहे।
मालती पलाश से लगे वसुंधरा दहे।।

नन्दलाल बाँसुरी रहे बजाय चाव में।
गोपियाँ समस्त आज हैं विभोर भाव में।।
देव यक्ष संग धेनु ग्वाल बाल झूमते।
'बासुदेव' ये छटा लखे स्वभाग्य चूमते।।

चामर छंद विधान -

"राजराजरा" सजा रचें सुछंद 'चामरं'।
पक्ष वर्ण छंद गूँज दे समान भ्रामरं।।

"राजराजरा" = रगण जगण रगण जगण रगण।
पक्ष वर्ण = पंद्रह वर्ण का वर्णिक छंद।

(गुरु लघु ×7) + गुरु = 15 वर्ण। चार चरण दो- दो या चारों चरण समतुकान्त।

तरलनयन छंद "नटवर छवि"

कबहुँ पड़त, कबहुँ उठत।
नटवर जब, सँभल चलत।।
ठुमकि ठुमकि, धरत चरण।
सरस सकल, यह विवरण।।

यशुमति लख, अति पुलकित।
तन मन दृग, हृदय चकित।।
रह रह कर, वह विहँसत।
सुर नर मुनि, छवि वरनत।।

तरलनयन छंद विधान -

चतुष नगण, षट षट यति।
'तरलनयन', धरतत गति।।

तरलनयन छंद चार नगण से युक्त 12 वर्ण का वर्णिक छंद है। इसमें सब लघु वर्ण रहने चाहिए। यति छह छह वर्ण पर है। चार पद का छंद। दो दो या चारों पद समतुकांत होने चाहिए।
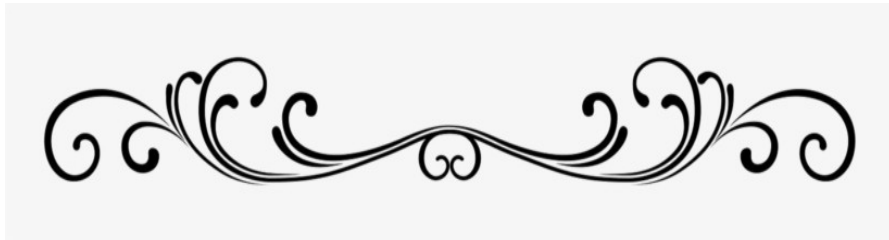
तिलका छंद "युद्ध"

गज अश्व सजे।
रण-भेरि बजे।।
रथ गर्ज हिले।
सब वीर खिले ।।1।।

ध्वज को फहरा।
रथ रौंद धरा।।
बढ़ते जब ही।
सिमटे सब ही ।।2।।

बरछे गरजे।
सब ही लरजे।।
जब बाण चले।
धरणी दहले ।।3।।

नभ नाद छुवा।
रण घोर हुवा।
रज खूब उड़े।
घन ज्यों उमड़े ।।4।।

तलवार चली।
धरती बदली।।
लहु धार बही।
भइ लाल मही ।।5।।

कट मुंड गए।
सब त्रस्त भए।।
धड़ नाच रहे।
अब हाथ गहे ।।6।।

शिव तांडव सा।
खलु दानव सा।।
यह युद्ध चला।
सब ही बदला ।।7।।

जब शाम ढ़ली।
चँडिका हँस ली।।
यह युद्ध रुका।
सब जाय चुका ।।8।।

तिलका छंद विधान -

"सस" वर्ण धरे।
'तिलका' उभरे।।

"सस" = सगण सगण।

(112 112) = 6 वर्ण प्रति चरण का वर्णिक छंद। चार चरण। दो-दो चरण समतुकांत

तोटक छंद "विरह"

सब ओर छटा मनभावन है।
अति मौसम आज सुहावन है।।
चहुँ ओर नये सब रंग सजे।
दृग देख उन्हें सकुचाय लजे।।

सखि आज पिया मन माँहि बसे।
सब आतुर होयहु अंग लसे।।
कछु सोच उपाय करो सखिया।
पिय से किस भी विध हो बतिया।।

मन मोर बड़ा अकुलाय रहा।
विरहा अब और न जाय सहा।।
तन निश्चल सा बस श्वांस चले।
हर आहट को सुन ये दहले ।।

जलती यह शीत बयार लगे।
मचले मचले कुछ भाव जगे।।
बदली नभ की न जरा बदली।
पर मैं बदली अब हो पगली।।

तोटक छंद विधान -

जब द्वादश वर्ण "ससासस" हो।
तब 'तोटक' पावन छंदस हो।।

"ससासस" = चार सगण।

112 112 112 112 = 12 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण दो- दो या चारों चरण समतुकान्त।

दोधक छंद / बंधु छंद "आत्म मंथन"

मन्थन रोज करो सब भाई।
दोष दिखे सब ऊपर आई।।
जो मन माहिँ भरा विष भारी।
आत्मिक मन्थन देत उघारी।।

खोट विकार मिले यदि कोई।
जान हलाहल है विष सोई।।
शुद्ध विवेचन हो तब ता का।
सोच निवारण हो फिर वा का।।

भीतर झाँक जरा अपने में।
क्यों रहते जग को लखने में।।
ये मन घोर विकार भरा है।
किंतु नहीं परवाह जरा है।।

मत्सर, द्वेष रखो न किसी से।
निर्मल भाव रखो सब ही से।।
दोष बचे उर माँहि न काऊ।
सात्विक होवत गात, सुभाऊ।।

दोधक छंद / बंधु छंद विधान -

दोधक छंद जो कि बंधु छंद के नाम से भी जाना जाता है, ११ वर्ण प्रति चरण का वर्णिक छंद है।

"भाभभगाग" इकादश वर्णा।
देवत 'दोधक' छंद सुपर्णा।।

"भाभभगाग" = भगण भगण भगण गुरु गुरु।

211 211 211 22 = 11 वर्ण। चार चरण, दो दो सम तुकांत।

द्रुतविलम्बित छंद "गोपी विरह"

मन बसी जब से छवि श्याम की।
रह गई नहिँ मैं कछु काम की।।
लगत वेणु निरन्तर बाजती।
श्रवण में धुन ये बस गाजती।।

मदन मोहन मूरत साँवरी।
लख हुई जिसको अति बाँवरी।।
हृदय व्याकुल हो कर रो रहा।
विरह और न जावत ये सहा।।

विकल हो तकती हर राह को।
समझते नहिँ क्यों तुम चाह को।।
उड़ गया मन का सब चैन ही।
तृषित खूब भये दउ नैन ही।।

मन पुकार पुकार कहे यही।
तु करुणाकर जानत क्या सही।।
दरश दे कर कान्ह उबार दे।
नयन-प्यास बुझा अब तार दे।।

द्रुतविलम्बित छंद विधान -

"नभभरा" इन द्वादश वर्ण में।
'द्रुतविलम्बित' दे धुन कर्ण में।।

नभभरा = नगण, भगण, भगण और रगण।

111 211 211 212 = 12 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण, दो दो चरण समतुकांत।

धार छंद "आज की दशा"

अत्याचार।
भ्रष्टाचार।।
का है जोर।
चारों ओर।।1।।

सारे लोग।
झेलें रोग।।
हों लाचार।
खाएँ मार।।2।।

नेता नीच।
आँखें मीच।।
फैला कीच।
राहों बीच।।3।।

पूँजी जोड़।
माथा मोड़।।
भागे छोड़।
नाता तोड़।।4।।

आशा नाँहि।
लोगों माँहि।।
खोटे जोग।
का है योग।।5।।

सारे आज।
खोये लाज।।
ना है रोध।
कोई बोध।।6।।

धार छंद विधान -

"माला" वार।
पाओ 'धार'।।

"माला" = मगण लघु

222 1 = 4 वर्ण प्रति चरण का वर्णिक छंद। 4 चरण, 2-2 या चारों चरण समतुकांत।

धुनी छंद "फाग रंग"

फागुन सुहावना।
मौसम लुभावना।।
चंग बजती जहाँ।
रंग उड़ते वहाँ।।

बालक गले लगे।
प्रीत रस हैं पगे।।
नार नर दोउ ही।
नाँय कम कोउ ही।।

राग थिरकात है।
ताल ठुमकात है।।
झूम सब नाचते।
मोद मन मानते।।

धर्म अरु जात को।
भूल सब बात को।।
फाग रस झूमते।
एक सँग खेलते।।

धुनी छंद विधान -

"भाजग" रखें गुनी।
'छंद' रचते 'धुनी'।।

"भाजग" = भगण जगण गुरु।

211 121 2 = 7 वर्ण प्रति चरण का वर्णिक छंद। चार चरण, दो दो समतुकांत।

नील छंद / अश्वगति छंद "विरहणी"

वे मन-भावन प्रीत लगा कर छोड़ चले।
खावन दौड़त रात भयानक आग जले।।
पावन सावन बीत गया अब हाय सखी।
आवन की धुन में उन के मन धीर रखी।।

वर्षण स्वाति लखै जिमि चातक धीर धरे।
त्यों मन व्याकुल साजन आ कब पीर हरे।।
आकुल भू कब अंबर से जल धार बहे।
ये मन आतुर हो पिय का वनवास सहे।।

मोर चकोर अकारण शोर मचावत है।
बागन की छवि जी अब और जलावत है।।
ये बरषा विरहानल को भड़कावत है।
गीत नये उनके मन को न सुहावत है।।

कोयल कूक लगे अब वायस काँव मुझे।
पावस के इस मौसम से नहिँ प्यास बुझे।।
और बिछोह बचा कितना अब शेष पिया।
नेह-तृषा अब शांत करो लगता न जिया।।

नील छंद / अश्वगति छंद विधान -

नील छंद जो कि अश्वगति छंद के नाम से भी जाना जाता है, १६ वर्ण प्रति चरण का वर्णिक छंद है।

"भा" गण पांच रखें इक साथ व "गा" तब दें।
'नील' सुछंदजु षोडस आखर का रच लें।।

"भा" गण पांच रखें इक साथ व "गा" = 5 भगण + गुरु।

(211×5 + गुरु) = 16 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण, दो दो या चारों चरण समतुकांत।

पंचचामर छंद / नाराच छंद "देहाभिमान"

कभी न रूप, रंग को, महत्त्व आप दीजिये।
अनित्य ही सदैव ये, विचार आप कीजिये।।
समस्त लोग दास हैं, परन्तु देह तुष्टि के।
नये उपाय ढूँढते, सभी शरीर पुष्टि के।।

शरीर का निखार तो, टिके न चार रोज भी।
मुखारविंद का रहे, न दीप्त नित्य ओज भी।।
तनाभिमान त्याग दें, कभी न नित्य देह है।
असार देह में बसा, परन्तु घोर नेह है।।

समस्त कार्य ईश के, मनुष्य तो निमित्त है।
अचेष्ट देह सर्वथा, चलायमान चित्त है।।
अधीन चित्त प्राण के, अधीन प्राण शक्ति के।
अरूप ब्रह्म-शक्ति ये, टिकी सदैव भक्ति के।।

अतृप्त ही रहे सदा, मलीन देह वासना।
तुरन्त आप त्याग दें, शरीर की उपासना।।
स्वरूप 'बासुदेव' का, समस्त विश्व में लखें।
प्रसार दिव्य भक्ति का, समग्र देह में चखें।।

पंचचामर छंद / नाराच छंद विधान -

पंचचामर छंद जो कि नाराच छंद के नाम से भी जाना जाता है, १६ वर्ण प्रति पद का वर्णिक छंद है।

लघु गुरु x 8 = 16 वर्ण, यति 8+8 वर्ण पर। चार पद, दो दो समतुकांत।

पद्ममाला छंद "माँ के आँसू"

आँख में अश्रु लाती हो।
बाद में तू छुपाती हो।।
नैन से लो गिरे मोती।
आज तू मात क्यों रोती।।

पुत्र सारे हुए न्यारे।
जो तुझे प्राण से प्यारे।।
स्वार्थ के हैं सभी नाते।
आँख में नीर क्यों माते।।

रीत ये तो चली आई।
हैं न बेटे सगे भाई।।
व्यर्थ संसार में सारे।
नैन से क्यों झरे तारे।।

ईश की आस ही सच्ची।
और सारी सदा कच्ची।।
भक्त की टेक ले वे ही।
धीर हो सोच तू ये ही।।

पद्ममाला छंद विधान -

"रारगागा" रखो वर्णा।
'पद्ममाला' रचो छंदा।।

"रारगागा" = रगण रगण गुरु गुरु।

(212 212 2 2) = 8 वर्ण का वर्णिक छंद। 4 चरण, 2-2 चरण समतुकांत।

पवन छंद "श्याम शरण"

श्याम सलोने, हृदय बसत है।
दर्श बिना ये, मन तरसत है।।
भक्ति नाथ दें, कमल चरण की।
शक्ति मुझे दें, अभय शरण की।।

पातक मैं तो, जनम जनम का।
मैं नहिँ जानूँ, मरम धरम का।।
मैं अब आया, विकल हृदय ले।
श्याम बिहारी, हर भव भय ले।।

मोहन घूमे, जिन गलियन में।
वेणु बजाई, जिस जिस वन में।।
चूम रहा वे, सब पथ ब्रज के।
माथ धरूँ मैं, कण उस रज के।।

हीन बना मैं, सब कुछ बिसरा।
दीन बना मैं, दर पर पसरा।।
भीख कृपा की, अब नटवर दे।
वृष्टि दया की, सर पर कर दे।।

पवन छंद विधान -

"भातनसा" से, 'पवन' सजति है।
पाँच व सप्ता, वरणन यति है।।

"भातनसा" = भगण तगण नगण सगण।

211 22,1 111 112 = 12 वर्ण का वर्णिक छंद, यति 5 और 7 वर्ण पर, चार पद दो दो समतुकांत।

पावन छंद "सावन छटा"

सावन जब उमड़े, धरणी हरित है।
वारिद बरसत है, उफने सरित है।।
चातक नभ तकते, खग आस युत हैं।
मेघ कृषक लख के, हरषे बहुत हैं।।

घोर सकल तन में, घबराहट रचा।
है विकल सजनिया, पिय की रट मचा।।
देख हृदय जलता, जुगनू चमकते।
तारक अब लगते, मुझको दहकते।।

बारिस जब तन पे, टपकै सिहरती।
अंबर लख छत पे, बस आह भरती।।
बाग लगत उजड़े, चुपचाप खग हैं।
आवन घर उन के, सुनसान मग हैं।।

क्यों उमड़ घुमड़ के, घन व्याकुल करो।
आ झटपट बरसो, विरहा सब हरो।।
हे प्रियतम लख लो, तन का लरजना।
आ कर तुम सुध लो, बन मेघ सजना।।

पावन छंद विधान -

"भानजुजस" वरणी, यति आठ सपते।
'पावन' यह मधुरा, सब छंद जपते।।

"भानजुजस" = भगण नगण जगण जगण सगण।

यति आठ सपते = यति आठ और सात वर्ण पे।

211 111 12,1 121 112 = 15 वर्ण का वर्णिक छंद, यति 8, 7। चार पद, दो दो समतुकांत।

पुट छंद "रामनवमी"

नवम तिथि सुहानी, चैत्र मासा।
अवधपति करेंगे, ताप नासा।।
सकल गुण निधाना, दुःख हारे।
चरण सर नवाएँ, आज सारे।।

मुदित मन अयोध्या, आज सारी।
दशरथ नृप में भी, मोद भारी।।
हरषित मन तीनों, माइयों का।
जनम दिवस चारों, भाइयों का।।

नवल नगर न्यारा, आज लागे।
इस प्रभु-पुर के तो, भाग्य जागे।।
घर घर ढ़प बाजे, ढोल गाजे।
गलियन रँगरोली, खूब साजे।।

प्रमुदित नर नारी, गीत गायें।
जहँ तहँ मिल धूमें, वे मचायें।।
हम सब मिल के ये, पर्व मानें।
रघुवर-गुण प्यारे, ही बखानें।।

पुट छंद विधान -

"ननमय" यति राखें, आठ चारा।
'पुट' मधुर रचायें, छंद प्यारा।।

"ननमय" = नगण नगण मगण यगण।

111 111 22,2 122 = 12 वर्ण का वर्णिक छंद, यति 8,4 वर्ण पर। चार पद, दो दो समतुकांत।

पुटभेद छंद "बसंत छटा"

छा गये ऋतुराज बसंत बड़े मन-भावने।
दृश्य आज लगे अति मोहक नैन सुहावने।।
आम्र-कुंज हरे चित, बौर लदी हर डाल है।
कोयली मधु राग सुने मन होत रसाल है।।

रक्त-पुष्प लदी टहनी सब आज पलास की।
सूचना जिमि देवत आवन की मधुमास की।।
चाव से परिपूर्ण छटा मनमोहक फाग की।
चंग थाप कहीं पर, गूँज कहीं रस राग की।।

ठंड से भरपूर अभी तक मोहक रात है।
शीत से सित ये पुरवा सिहरावत गात है।।
प्रेम-चाह जगा कर व्याकुल ये उसको करे।
दूर प्रीतम से रह आह भयावह जो भरे।।

काम के सर से लगते सब घायल आज हैं।
देखिये जिस और वहाँ पर ये मधु साज हैं।।
की प्रदान नवीन उमंग तरंग बसंत ने।
दे दिये नव भाव उछाव सभी ऋतु-कंत ने।।

पुटभेद छंद विधान -

"रासासासुलाग" सुछंद रचें अति पावनी।
वर्ण सप्त दशी 'पुटभेद' बड़ी मन भावनी।।

"रासासासुलाग" = रगण सगण सगण सगण सगण लघु गुरु।

(212 112 112 112 112 1 2) = 17 वर्ण प्रति चरण का वर्णिक छंद, 4 चरण, 2-2 चरण समतुकान्त।

पुण्डरीक छंद "राम-वंदन"

मेरे तो हैं बस राम एक स्वामी।
अंतर्यामी करतार पूर्णकामी।।
भक्तों के वत्सल राम चन्द्र न्यारे।
दासों के हैं प्रभु एक ही सहारे।।1।।

माया से आप अतीत शोक हारी।
हाथों में दिव्य प्रचंड चाप धारी।।
संधानो तो खलु घोर दैत्य मारो।
बाढ़े भू पे जब पाप आप तारो।।2।।

पित्राज्ञा से वनवास में सिधाये।
सीता सौमित्र तुम्हार संग आये।।
किष्किन्धा में हनु सा सुवीर पाई।
लंका पे सागर बाँध की चढ़ाई।।3।।

संहारे रावण को कुटुंब साथा।
गाऊँ सारी महिमा नवाय माथा।।
मेरे को तो प्रभु राम नित्य प्यारे।
वे ऐसे जो भव-भार से उबारे।।4।।

सीता संगे रघुनाथ जी बिराजे।
तीनों भाई, हनुमान साथ साजे।।
शोभा कैसे दरबार की बताऊँ।
या के आगे सुर-लोक तुच्छ पाऊँ।।5।।

ये ही शोभा मन को सदा लुभाये।
ये सारे ही नित 'बासुदेव' ध्याये।।
वो अज्ञानी चरणों पड़ा भिखारी।
आशा ले के बस भक्ति की तिहारी।।6।।

पुण्डरीक छंद विधान -

"माभाराया" गण से मिले दुलारी।
ये प्यारी छंदस 'पुण्डरीक' न्यारी।।

"माभाराया" = मगण भगण रगण यगण।

(222 211 212 122) = 12 वर्ण प्रति चरण का वर्णिक छंद। 4 चरण, 2-2 चरण समतुकान्त।

प्रमिताक्षरा छंद "मधुर मिलन"

सजती सदा सजन से सजनी।
शशि से यथा धवल हो रजनी।।
यह भूमि आस धर के तरसे।
कब मेघ आय इस पे बरसे।।

लगता मयंक नभ पे उभरा।
नव चाव रात्रि मन में पसरा।।
जब शुभ्र आभ इसकी बिखरे।
तब मुग्ध होय रजनी निखरे।।

सजना सजे सजनियाँ सहमी।
धड़के मुआ हृदय जो वहमी।।
घिर बार बार असमंजस में।
अब चैन है न इस अंतस में।।

मन में मची मिलन आतुरता।
अँखियाँ करे चपल चातुरता।।
उर में खिली मदन मादकता।
तन में बढ़ी प्रणय दाहकता।।

प्रमिताक्षरा छंद विधान -

"सजसासु" वर्ण सज द्वादश ये।
'प्रमिताक्षरा' मधुर छंदस दे।।

"सजसासु" = सगण जगण सगण सगण।

112 121 112 112 = 12 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण, दो दो समतुकांत।

प्रहरणकलिका छंद "विकल मन"

मधुकर तुम क्यों गुनगुन करते।
सुलगत हिय में छटपट भरते।।
हृदय रहत आकुल अब नित है।
इन कलियन में मधु-रस कित है।।

पुहुप पुहुप पे भ्रमण करत हो।
विरहण सम आतुर विचरत हो।।
भ्रमर परखलो सब कुछ बदला।
गिरधर बिन तो कण कण पगला।।

नयन विकल मोहन-रस रत हैं।
हरि-छवि चखने मग निरखत हैं।।
यह तन मन नीरस पतझड़ सा।
जगत लगत पाहन सम जड़ सा।।

शुभ अवसर दो तव दरशन का।
व्यथित रस चखूँ दउ चरणन का।।
नटवर प्रकटो सुखकर वर दो।
सरस अमिय जीवन यह कर दो।।

प्रहरणकलिका छंद विधान -

"ननभन लग" छंद रचत शुभदा।
'प्रहरणकलिका' रसमय वरदा।।

"ननभन लग" = नगण नगण भगण नगण लघु गुरु।

111 111 211 111+ लघु गुरु = 14 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण, दो दो समतुकांत

उदाहरण छंद "गणपति-छवि"

गणपति-छवि अन्तरपट धर के।
नित नव रस में मन सित कर के।।
गजवदन विनायक जप कर ले।
कलि-भव-भय से नर तुम तर ले।।

बिंदु छंद "राम कृपा"

सत्यसनातन, ये है ज्ञाना।
भक्ति बिना नहिँ, हो कल्याना।।
राम-कृपा जब, होती प्राणी।
हो तब जागृत, अन्तर्वाणी।।

चक्षु खुले मन, हो आचारी।
दूर हटे तब, माया सारी।।
प्रीत बढ़े जब, सद्धर्मों में।
जी रहता नित, सत्कर्मों में।।

राम समान न, कोई देवा।
इष्ट धरो अरु, चाखो मेवा।।
नित्य जपे नर, जो भी माला।
दुःख हरे सब, वे तत्काला।।

पाप भरी यह, मेरी काया।
मैं नतमस्तक, हो के आया।।
राम दयामय, मोहे तारो।
कष्ट सभी प्रभु, मेरे हारो।।

बिंदु छंद विधान -

"भाभमगा" यति, छै ओ' चारी।
'बिंदु' रचें सब, छंदा प्यारी।।

"भाभमगा" = भगण भगण मगण गुरु

(211 211, 222 2) = 10 वर्ण प्रति पद का वर्णिक छंद। 4 पद, (यति 6 और 4 वर्ण पर।) दो-दो पद समतुकांत।

बुदबुद छंद "बसंत पंचमी"

सुखद बसंत पंचमी।
पतझड़ शुष्कता थमी।।
सब फिर से हरा-भरा।
महक उठी वसुंधरा।।

विटप नवीन पर्ण में।
कुसुम अनेक वर्ण में।।
खिल कर झूमने लगे।
यह लख भाग्य ही जगे।।

कुहुक सुनाय कोयली।
गरजत मन्द बादली।।
भ्रमर-गुँजार छा रही।
सरगम धार सी बही।।

शुभ ऋतुराज आ गया।
अनुपम चाव छा गया।।
कलरव दिग्दिगंत में।
मुदित सभी बसंत में।।

बुदबुद छंद विधान -

"नजर" सु-वर्ण नौ रखें।
'बुदबुद' छंद को चखें।।

"नजर" = नगण, जगण, रगण

(111 121 212) = 9 वर्ण का वर्णिक छंद, 4 चरण दो-दो चरण समतुकांत

भक्ति छंद "कृष्ण-विनती"

दो भक्ति मुझे कृष्णा।
मेटो जग की तृष्णा।।
मैं पातक संसारी।
तू पापन का हारी।।1।।

मैं घोर अनाचारी।
तू दिव्य मनोहारी।।
चाहूँ करुणा तेरी।
दे दो न करो देरी।।2।।

वृंदावन में जाऊँ।
शोभा ब्रज की गाऊँ।।
मैं वेणु सुनूँ प्यारी।
छानूँ धरती न्यारी।।3।।

गोपाल चमत्कारी।
तेरी महिमा भारी।।
छायी अँधियारी है।
तू तो अवतारी है।।4।।

आशा मन में धारे।
आया प्रभु के द्वारे।।
गाऊँ नित केदारी।
आभा वरनूँ थारी।।5।।

ये 'बासु' रचे गाथा।
टेके दर पे माथा।।
दो दर्श उसे नाथा।
राखो सर पे हाथा।।6।।

भक्ति छंद विधान -

"तायाग" सजी क्या है।
ये 'भक्ति' सुछंदा है।।

"तायाग" = तगण यगण, गुरु

221 122 2 = कुल 7 वर्ण प्रति चरण का वर्णिक छंद। 4 चरण, दो-दो चरण समतुकांत या चारों चरण समतुकांत।

भुजंगप्रयात छंद "नोट बन्दी"

हुई नोट बन्दी ठगा सा जमाना।
किसी को रुलाना किसी को हँसाना।।
कहीं आँसुओं की झड़ी सी लगी है।
कहीं पे खुशी की दिवाली जगी है।।

इकट्ठा जिन्होंने किया वित्त काला।
उन्हीं का पिटा आज देखो दिवाला।।
बसी थी जहाँ अल्प ईमानदारी।
खरे लोग देखो सभी हैं सुखारी।।

कहीं नोट की लोग होली जलाते।
कहीं बन्द बोरे नदी में बहाते।।
किसी के जगे भाग खाते खुला के।
कराए जमा नोट काले धुला के।।

सभी बैंक में आ गई भीड़ सारी।
लगी हैं कतारें मचा शोर भारी।।
कमी नोट की सामने आ रही है।
नहीं जानते क्या हुआ ये सही है।।

भुजंगप्रयात छंद विधान -

4 यगण (122) यानी कुल 12 वर्ण प्रत्येक चरण का वर्णिक छंद। चार चरण दो दो समतुकांत।

भूमिसुता छंद "जीव-हिंसा"

जीवों की हिंसा प्राणी क्यों, हो करते।
तेरे कष्टों से ही आहें, ये भरते।।
भारी अत्याचारों को ये, झेल रहे।
इन्सां को मूकों की पीड़ा, कौन कहे।।

कष्टों के मारे बेचारे, जीव सभी।
पूरी जो ना हो राखे ना, चाह कभी।।
जो भी दे दो वो ही खा के, मस्त रहे।
इन्सां तेरे दुःखों को क्यों, मूक सहे।।

जाँयें तो जाँयें कैसे ये, भाग कहीं।
प्राणों के घाती ही पायें, जाँय वहीं।।
इंसानों ने भी राखा है, बाँध इन्हें।
थोड़ी भी आजादी है दी, नाँहि जिन्हें।।

लाचारी में पीड़ा झेलें, नित्य महा।
दुःखों में ऐसे हैं ये जो, जा न कहा।।
हैं संसारी रिश्ते नाते, स्वार्थ सने।
लागें हैं दूजों को सारे, ही डसने।।

भूमिसुता छंद विधान -

"मामामासा" तोड़ो आठा, चार सजा।
सारे भाई चाखो छंदा, 'भूमिसुता'।।

"मामामासा" = मगण मगण मगण सगण

222 222 22//2 112 = 12 वर्ण का वर्णिक छंद, यति 8,4 वर्ण पर। चार चरण, दो दो समतुकांत।

भृंग छंद "विरह विकल कामिनी"

सँभल सँभल चरण धरत, चलत जिमि मराल।
बरनउँ किस विध मधुरिम, रसमय मृदु चाल।।
दमकत तन-द्युति लख कर, थिर दृग रह जात।
तड़क तड़ित सम चमकत, बिच मधु बरसात।।

शशि-मुख छवि अति अनुपम, निरख बढ़त प्यास।
रसिक हृदय मँह यह लख, जगत मिलन आस।।
विरह विकल अति अब यह, कनक वरण नार।
दिन निशि कटत न समत न, तरुण-वयस भार।।

अँखियन थकि निरखत मग, इत उत हर ओर।
हलचल विकट हृदय मँह, उठत अब हिलोर।।
पुनि पुनि यह कथन कहत, सुध बिसरत मोर।
लगत न जिय पिय बिन अब, बढ़त अगन जोर।।

मन हर कर छिपत रहत, कित वह मन-चोर।
दरसन बिन तड़पत दृग, कछु न चलत जोर।।
विरह डसन हृदय चुभत, मिलत न कछु मन्त्र।
जलत सकल तन रह रह, कछुक करहु तन्त्र।।

भृंग छंद विधान -

"ननुननुननु गल" पर यति, दश द्वय अरु अष्ट।
रचत मधुर यह रसमय, सब कवि जन 'भृंग'।।

"ननुननुननु गल" = नगण की 6 आवृत्ति फिर गुरु लघु।

111 111 111 111 // 111 111 21 = 20 वर्ण का वर्णिक छंद, यति 12, 8 वर्ण पर, 4 पद, 2-2 पद समतुकांत।

मंजुभाषिणी छंद "शहीद दिवस"

इस देश की भगत सिंह शान है।
सुखदेव राजगुरु आन बान है।।
हम आह आज बलिदान पे भरें।
उन वीर की चरण वन्दना करें।।

अति घोर कष्ट कटु जेल के सहे।
चढ़ फांस-तख्त पर भी हँसे रहे।।
निज प्राण देश-हित में जिन्हें दिये।
उनको लगा कर सदा रखें हिये।।

तिथि मार्च तेइस शहीद की मने।
उनके समान जन देश के बने।।
प्रण आज ये हृदय धार लें सभी।
नहिँ देश का हनन गर्व हो कभी।।

हम पुष्प अर्पित समाधि पे करें।
इस देश की सब विपत्तियाँ हरें।।
यह भाव-अंजलि सही तभी हुये।
जब विश्व भी चरण देश के छुये।।

(23 मार्च शहीद दिवस पर श्रद्धान्जलि।)

मंजुभाषिणी छंद विधान -

"सजसाजगा" रचत 'मंजुभाषिणी'।
यह छंद है अमिय-धार वर्षिणी।।

"सजसाजगा" = सगण जगण सगण जगण गुरु।

112 121 112 121 + गुरु = कुल 13 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण, दो दो समतुकांत।

मंदाक्रान्ता छंद "लक्ष्मी स्तुति"

लक्ष्मी माता, जगत जननी, शुभ्र रूपा शुभांगी।
विष्णो भार्या, कमल नयनी, आप हो कोमलांगी।।
देवी दिव्या, जलधि प्रगटी, द्रव्य ऐश्वर्य दाता।
देवों को भी, कनक धन की, दायिनी आप माता।।

नीलाभा से, युत कमल को, हस्त में धारती हैं।
हाथों में ले, कनक घट को, सृष्टि संवारती हैं।।
चारों हाथी, दिग पति महा, आपको सींचते हैं।
सारे देवा, विनय करते, मात को सेवते हैं।।

दीपों की ये, जगमग जली, ज्योत से पूजता हूँ।
भावों से ये, स्तवन करता, मात मैं धूजता हूँ।।
रंगोली से, घर दर सजा, बाट जोहूँ तिहारी।
आओ माते, शुभ फल प्रदा, नित्य आह्लादकारी।।

आया हूँ मैं, तव शरण में, भक्ति का भाव दे दो।
मेरे सारे, दुख दरिद की, मात प्राचीर भेदो।।
मैं आकांक्षी, चरण-रज का, 'बासु' तेरा पुजारी।
खाली झोली, बस कुछ भरो, चाहता ये भिखारी।।

मंदाक्रान्ता छंद विधान -

"माभानाता,तगग" रच के, चार छै सात तोड़ें।
'मंदाक्रान्ता', चतुष पद का, छंद यूँ आप जोड़ें।।

"माभानाता, तगग" = मगण, भगण, नगण, तगण, तगण, गुरु गुरु।

चार छै सात तोड़ें = चार वर्ण, छ वर्ण और सात वर्ण पर यति।

222 2,11 111 2,21 221 22 = कुल 17 वर्ण का वर्णिक छंद। चार पद। दो दो या चारों पद समतुकांत।

(संस्कृत का प्रसिद्ध छंद जिसमें मेघदूतम् लिखा गया है।)

मकरन्द छंद "कन्हैया वंदना"

किशन कन्हैया, ब्रज रखवैया,
भव-भय दुख हर, घट घट वासी।
ब्रज वनचारी, गउ हितकारी,
अजर अमर अज, सत अविनासी।।
अतिसय मैला, अघ जब फैला,
धरत कमलमुख, तब अवतारा।
यदुकुल माँही, तव परछाँही,
पड़त जनम तुम, धरतत कारा ।।1।।

पय दधि पाना, मृदु मुसकाना,
लख कर यशुमति, हरषित भारी।
कछु बिखराना, कछु लिपटाना,
तब यह लगतत, द्युति अति प्यारी।।
मधुरिम शोभा, तन मन लोभा,
निश दिन निरखत, ब्रज नर नारी।
सुख अति पाके, गुण सब गाके,
बरणत यह छवि, जग मँह न्यारी ।।2।।

असुर सँहारे, बक अघ तारे,
दनुज रहित महि, नटवर कीन्ही।
सुर मुनि सारे, कर जयकारे,
कहत विनय कर, सुध प्रभु लीन्ही।।
अनल दुखारी, वन जब जारी,
प्रसरित कर मुख, तुम सब पी ली।
कर मुरली है, मन हर ली है,
लखत सकल यह, छवि चटकीली ।।3।।

सुरपति क्रोधा, धर गिरि रोधा,
विकट विपद हर, ब्रज भय टारा।
कर वध कंसा, गहत प्रशंसा,
सकल जगत दुख, प्रभु तुम हारा।।
हरि गिरिधारी, शरण तिहारी,
तुम बिन नहिँ अब, यह मन मोहे।
छवि अति प्यारी, जन मन हारी,
हृदय 'नमन' कवि, यह नित सोहे ।।4।।

मकरन्द छंद विधान -

"नयनयनाना, ननगग" पाना,
यति षट षट अठ, अरु षट वर्णा।
मधु 'मकरन्दा', ललित सुछंदा,
रचत सकल कवि, यह मृदु कर्णा।।

"नयनयनाना, ननगग" = नगण यगण नगण यगण नगण नगण नगण नगण गुरु गुरु

111 122, 111 122, 111 111 11,1 111 22 = 26 वर्ण का वर्णिक छंद, 4 पद, यति 6, 6, 8, 6 वर्णों पर। दो-दो या चारों पद समतुकांत।

मधुमती छंद "मधुवन महके"

मधुवन महके।
शुक पिक चहके।।
जन-मन सरसे।
मधु रस बरसे।।

ब्रज-रज उजली।
कलि कलि मचली।।
गलि गलि सुर है।
गिरधर उर है।।

नयन सजल हैं।
वयन विकल हैं।।
हृदय उमड़ता।
मति मँह जड़ता।।

अति अघकर मैं।
तव पग पर मैं।।
प्रभु पसरत हूँ।
'नमन' करत हूँ।।

मधुमती छंद विधान -

"ननग" गणन की।
मधुर 'मधुमती'।।

"ननग" = (नगण नगण गुरु)

111 111 2 = 7 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण, दो-दो चरण समतुकांत.

मनविश्राम छंद "माखन लीला"

माखन श्याम चुरा नित ही, कछु खावत कछु लिपटावै।
ग्वाल सखा सह धूम करे, यमुना तट गउन चरावै।।
फोड़त माखन की मटकी, सब गोरस नित बिखराये।
गोपिन भी लख हर्षित हैं, पर रोष बयन दिखलाये।।

मात यशोमत नित्य मथे, दधि की जब लबलब झारी।
मोहन आय तभी धमकै, अरु बाँह भरत महतारी।।
मात बिलोवत जाय रहे, तब कान्ह करत बरजोरी।
नन्द-तिया पुलकै मुलकै, सुत की लख नित नव त्योरी।।

माधव संग सखा सब ले, जब ग्वालिन गृह मँह धाये।
ऊधम खूब मचाय वहाँ, सब गोपिन हृदय लुभाये।।
पीठ चढ़े इक दूजन की, तब छींकन पर चढ़ जावै।
माखन लूटत भाजन से, दिखलाकर चख चख खावै।।

मोहन की छवि ये उर में, मन उज्ज्वल पर तन कारा।
रोज मचा हुड़दंग यही, हरता बृज-जन-मन सारा।।
गोपिन को ललचा कर के, मनमोहक छवि दिखलावै।
कृष्ण बसो उर में तुम आ, गुण 'बासु' नमन करि गावै।।

मनविश्राम छंद विधान -

"भाभभुभाभनुया" यति दें, दश रुद्र वरण अभिरामा।
छंद रचें कवि वृन्द सभी, मनभावन 'मनविशरामा'।।

"भाभभुभाभनुया" = भगण की 5 आवृत्ति फिर नगण यगण।

211 211 211 2,11 211 111 122 = कुल 21 वर्ण का वर्णिक छंद, यति 10 और 11 वर्ण पर, चार पद, 2-2 पद समतुकांत।

मनोज्ञा छंद "होली"

भर सनेह रोली।
बहुत आँख रो ली।।
सजन आज होली।
व्यथित खूब हो ली।।

मधुर फाग आया।
पर न अल्प भाया।।
कछु न रंग खेलूँ।
विरह पीड़ झेलूँ।।

यह बसंत न्यारी।
हरित आभ प्यारी।।
प्रकृति भी सुहायी।
नव उमंग छायी।।

पर मुझे न चैना।
कटत ये न रैना।।
सजन याद आये।
न कुछ और भाये।।

विकट ये बिमारी।
मन अधीर भारी।।
सुख समस्त छीना।
अति कठोर जीना।।

अब तुरंत आ के।
हृदय से लगा के।।
सुध पिया तु लेवो।
न दुख और देवो।।

मनोज्ञा छंद विधान -

"नरगु" वर्ण सप्ता।
रचत है 'मनोज्ञा'।।

"नरगु" = नगण रगण गुरु

111 212 + गुरु = 7 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण, दो दो समतुकांत।

मलयज छंद "प्रभु-गुण"

सुन मन-मधुकर।
मत हिय मद भर।।
करत कलुष डर।
हरि गुण उर धर।।

सरस अमिय सम।
प्रभु गुण हरदम।।
मन हरि मँह रम।
हर सब भव तम।।

मन बहुत विकल।
हलचल प्रतिपल।।
पड़त न कछु कल।
हरि-दरशन हल।।

प्रभु-शरण लखत।
यह सर अब नत।।
तव चरण पड़त।
रख नटवर पत।।

मलयज छंद विधान -

"ननलल" लघु सब।
'मलयज' रच तब।।

"ननलल" = नगण नगण लघु लघु।

111 111 11 = 8 लघु वर्ण का वर्णिक छंद, 4 चरण, दो दो समतुकांत।

मालिनी छंद "हनुमत स्तुति"

पवन-तनय प्यारा, अंजनी का दुलारा।
तपन निगल डारा, ठुड्डु बाँका तुम्हारा।।
हनुमत बलवाना, वज्र देही महाना।
सकल गुण निधाना, ज्ञान के हो खजाना।।

जलधि उतर पारा, सीय को खोज डारा।
कनक-नगर जारा, राम का काज सारा।।
अवधपति सहायी, नित्य रामानुयायी।
अतिसय सुखदायी, भक्त को शांतिदायी।।

भुजबल अति भारी, शैल आकार धारी।
दनुज दलन कारी, व्योम के हो विहारी।।
घिर कर जग-माया, घोर संताप पाया।
तव दर प्रभु आया, नाथ दो छत्रछाया।।

सकल जगत त्राता, मुक्ति के हो प्रदाता।
नित गुण तव गाता, आपका रूप भाता।।
भगतन हित कारी, नित्य हो ब्रह्मचारी।
प्रभु शरण तिहारी, चाहता ये पुजारी।।

मालिनी छंद विधान -

"ननिमयय" गणों में, 'मालिनी' छंद जोड़ें।
यति अठ अरु सप्ता, वर्ण पे आप तोड़ें।।

"ननिमयय" = नगण, नगण, मगण, यगण, यगण।

111 111 22,2 122 122 = मालिनी छंद प्रति पद 15 वर्ण का वर्णिक छंद है जिसमें यति क्रमशः आठ और सात वर्ण के बाद होती है। चार पद, दो दो समतुकांत।

सुंदर काण्ड का- 'अतुलित बलधामं हेम शैलाभ देहं' श्लोक इसी छंद में है।

मोटनक छंद "भारत की सेना"

सेना अरि की हमला करती।
हो व्याकुल माँ सिसकी भरती।।
छाते जब बादल संकट के।
आगे सब आवत जीवट के।।

माँ को निज शीश नवा कर के।
माथे रज भारत की धर के।।
टीका तब मस्तक पे सजता।
डंका रिपु मारण का बजता।।

सेना करती जब कूच यहाँ।
छाती अरि की धड़कात वहाँ।।
डोले तब दिग्गज और धरा।
काँपे नभ ज्यों घट नीर भरा।।

ये देख छटा रस वीर जगे।
सारी यह भू रणक्षेत्र लगे।।
गावें महिमा सब ही जिनकी।
माथे पद-धूलि धरूँ उनकी।।

मोटनक छंद विधान -

"ताजाजलगा" सब वर्ण शुभं।
राचें मधु छंदस 'मोटनकं'।।

"ताजाजलगा"= तगण जगण जगण लघु गुरु।

221 121 121 12 = 11 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण, दो दो समतुकांत।

मौक्तिक दाम छंद "विनायक वंदन"

गजानन विघ्न करो सब दूर।
करो प्रभु आस सदा मम पूर।।
नवा कर माथ करूँ नित जाप।
कृपा कर के हर लो भव-ताप।।

प्रियंकर रूप सजे गज-भाल।
छटा अति मोहक तुण्ड विशाल।।
गले उपवीत रखो नित धार।
भुजा अति पावन सोहत चार।।

धरें कर में शुभ अंकुश, पाश।
करें उनसे रिपु, दैत्य विनाश।।
बिराजत हैं कमलासन नाथ।
रखें सर पे शुभदायक हाथ।।

दयामय विघ्न विनाशक आप।
हरो प्रभु जन्मन के सब पाप।।
बसो हिय पूर्ण करो सब काज।
रखो प्रभु भक्तन की पत आज।।

मौक्तिक दाम छंद विधान -

पयोधर चार मिलें क्रमवार।
भुजा तुक में कुल पाद ह चार।।
रचें सब छंद महा अभिराम।
कहावत है यह मौक्तिक दाम।।

पयोधर = जगन ।S। के लिए प्रयुक्त होता है।

भुजा= दो का संख्यावाचक शब्द

121 121 121 121 = 12 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण, दो दो समतुकांत।

यशोदा छंद / कण्ठी छंद "प्यारी माँ"

तु मात प्यारी।
महा दुलारी।।
ममत्व पाऊँ।
तुझे रिझाऊँ।।

गले लगाऊँ।
सदा मनाऊँ।।
करूँ तुझे माँ।
प्रणाम मैं माँ।।

तु ही सवेरा।
हरे अँधेरा।।
बिना तिहारे।
कहाँ सहारे।।

दुलार देती।
बला तु लेती।।
सनेह दाता।
नमामि माता।।

यशोदा छंद / कण्ठी छंद विधान -

रखो "जगोगा"।
रचो 'यशोदा'।।

"जगोगा" = जगण, गुरु गुरु
(121 22) = 5 वर्ण का वर्णिक छंद, 4 चरण, 2-2 चरण समतुकांत।

"कण्ठी छंद" के नाम से भी यह छंद जाना जाता है, जिसका सूत्र -

कण्ठी छंद विधान -

"जगागा" वर्णी।
सु-छंद 'कण्ठी'।।

"जगागा" = जगण गुरु गुरु (121 2 2) = 5 वर्ण का वर्णिक छंद।

रक्ता छंद "शारदा वंदन"

ब्रह्म लोक वासिनी।
दिव्य आभ भासिनी।।
वेद वीण धारिणी।
हंस पे विहारिणी।।

शुभ्र वस्त्र आवृता।
पद्म पे विराजिता।।
दीप्त माँ सरस्वती।
नित्य तू प्रभावती।।

छंद ताल हीन मैं।
भ्रांति के अधीन मैं।।
मन्द बुद्धि को हरो।
काव्य की प्रभा भरो।।

छंद-बद्ध साधना।
काव्य की उपासना।।
मैं सदैव ही करूँ।
भाव से इसे भरूँ।।

मात ये विचार हो।
देश का सुधार हो।।
ज्ञान का प्रसार हो।
नष्ट अंधकार हो।।

शारदे दया करो।
ज्ञान से मुझे भरो।।
काव्य-शक्ति दे मुझे।
दिव्य भक्ति दे मुझे।।

रक्ता छंद विधान -

[रगण जगण गुरु]

(212 121 2) = 7 वर्ण का वर्णिक छंद, 4 चरण, दो-दो या चारों चरण समतुकांत।

रति छंद "प्यासा मन-भ्रमर"

मन मोहा, तन कुसुम सम तेरा।
हर लीन्हा, यह भ्रमर मन मेरा।।
अब तो ये, रह रह छटपटाये।
कब तृष्णा, परिमल चख बुझाये।।

मृदु हाँसी, जिमि कलियन खिली है।
घुँघराली, लट-छवि झिलमिली है।।
मधु श्वासें, मलय-महक लिये है।
कटि बांकी, अनल-दहक लिये है।।

मतवाली, शशि वदन यह गोरी।
मृगनैनी, चपल चकित चकोरी।।
चलती तो, लख हरिण शरमाये।
यह न्यारी, छवि न वरणत जाये।।

लगते हैं, अधर पुहुप लुभाये।
अब सारे, मिल यह मन जलाये।।
मन भौंरा, निरखत डगर तेरी।
मिल ने को, बिलखत कर न देरी।।

रति छंद विधान -

'रति' छंदा', रख गण "सभनसागे"।
यति चारा, अरु नव वरण साजे।।

"सभनसागे" = सगण भगण नगण सगण गुरु

(112 2,11 111 112 2) = 13 वर्ण का वर्णिक छंद, यति 4-9 वर्णों पर, 4 पद, दो-दो पद समतुकांत।

रतिलेखा छंद "विरह विदग्धा"

मन तो ठहर ठहर अब, सकपकाये।
पिय की डगर निरख दृग, झकपकाये।।
तुम क्यों अगन सजन यह, तन लगाई।
यह चाह हृदय मँह प्रिय, तुम जगाई।।

तुम आ कर नित किस विध, गुदगुदाते।
सब याद सजन फिर हम, बुदबुदाते।।
अब चाहत पुनि चित-चक, चहचहाना।
नित दूर न रह प्रियवर, कर बहाना।।

दहके विरह अगन सह, हृदय भारी।
मन ही मन बिलखत यह, दुखित नारी।।
सजना किन गलियन मँह, रह रहे हो।
सरिता नद किन किन सह, बह रहे हो।।

तुम तो नव कलियन रस, नित चखो रे।
इस ओर कबहु मधुकर, नहिँ लखो रे।।
किस कारण विरहण सब, दुख सहेगी।
दुखिया यह पिय सँग अब, कब रहेगी।।

रतिलेखा छंद विधान -

"सननानसग" षट दशम, वरण छंदा।
यति एक दश अरु पँचम, सु'रतिलेखा'।।

"सननानसग"= सगण नगण नगण नगण सगण गुरु।

(112 111 111 11,1 112 2) = 16 वर्ण का वर्णिक छंद, यति 11 और 5 वर्णों पर, 4 पद, दो-दो पद समतुकांत।

रत्नकरा छंद "अतृप्त प्रीत"

चंदा चित्त चुरावत है।
नैना नीर बहावत है।।
प्यासी प्रीत अतृप्त दहे।
प्यारा प्रीतम दूर रहे।।

ये भृंगी मन गूँजत है।
रो रो पीड़ सुनावत है।।
माला नित्य जपूँ पिय की।
भूली मैं सुध ही जिय की।।

रातें काट न मैं सकती।
तारों को नभ में तकती।।
बारंबार फटे छतिया।
है ये व्याकुल बावरिया।।

आँसू धार लिखी पतिया।
भेजूँ साजन लो सुधिया।।
चीखों की कुछ तो धुन ले।
निर्मोही सजना सुन ले।।

रत्नकरा छंद विधान -

"मासासा" नव अक्षर लें।
प्यारी 'रत्नकरा' रस लें।।

"मासासा" = मगण सगण सगण।

(222 112 112) = 9 वर्ण का वर्णिक छंद, 4 चरण, दो-दो चरण समतुकांत।

रथपद छंद "मधुर स्मृति"

जब तुम प्रियतम में खोती।
हलचल तब मन में होती।।
तुम अतिसय दुख की मारी।
विरह अगन सहती सारी।।

बरसत अँसुवन की धारा।
तन दहकत बन अंगारा।।
मरम रहित जग से हारी ।
गुजर करत सह लाचारी।।

निश-दिन तब कितने प्यारे।
जब पिय प्रणय-सुधा डारे।।
तन मन हरषित था भारी।
सरस प्रकृति नित थी न्यारी।।

मधुरिम स्मृति गठरी ढ़ोती।
स्मर स्मर कर उनको रोती।।
लहु कटु अनुभव का पीती।
बस दुख सह कर ही जीती।।

रथपद छंद विधान -

"ननुसगग" वरण का छंदा।
'रथपद' रचत सभी बंदा।।

"ननुसगग" = नगण नगण सगण गुरु गुरु।

(111 111 112 2 2) = 11 वर्ण का वर्णिक छंद, 4 चरण, दो-दो चरण समतुकांत।

रथोद्धता छंद "आह्वाहन"

मात अम्ब सम रूप राख के।
देश-भक्ति रस भंग चाख के।।
गर्ज सिंह सम वीर जागिये।
दे दहाड़ अब नींद त्यागिये।।

आज है दुखित मात भारती।
आर्त होय सबको पुकारती।।
वीर जाग अब आप जाइये।
धूम शत्रु-घर में मचाइये।।

देश का हित कभी न शीर्ण हो।
भाव ये हृदय से न जीर्ण हो।।
ये विचार रख के बढ़े चलो।
ही किसी न अवरोध से टलो।।

रौद्र रूप अब वीर धारिये।
मातृ भूमि पर प्राण वारिये।।
अस्त्र शस्त्र कर धार लीजिये।
मुंड काट रिपु ध्वस्त कीजिये।।

रथोद्धता छंद विधान -

"रानरा लघु गुरौ" 'रथोद्धता'।
तीन वा चतुस तोड़ के सजा।

रानरा लघु गुरौ = रगण नगण रगण लघु गुरु।

212 111 212 12 = 11 वर्ण प्रति पद का चतुष्पदी वर्णिक छंद। हर पद में तीसरे या चौथे वर्ण के बाद यति होती है।

रमणीयक छंद "कृष्ण महिमा"

मोर पंख सर पे कर में मधु बाँसुरी।
पीत वस्त्र कटि में कछनी अति माधुरी।।
ग्वाल बाल सँग धेनु चरावत मोहना।
कौन नित्य नहिं चाहत ये छवि जोहना।।

दिव्य रूप मनमोहन का नर चाख ले।
नाम-जाप रस को मन में तुम राख ले।।
कृष्ण श्याम मुरलीधर मोहन साँवरा।
एक नाम कछु भी जपले मन बावरा।।

मैं गँवार मति पाप-लिप्त अति दीन हूँ।
भोग और धन-संचय में बस लीन हूँ।।
धर्म आचरण का प्रभु मैं नहिँ विज्ञ हूँ।
भाव भक्ति अरु अर्चन से अनभिज्ञ हूँ।।

मैं दरिद्र शरणागत हो प्रभु आ गया।
हाथ थाम कर हे ब्रजनाथ करो दया।।
भीर कोउ पड़ती तुम्हरा तब आसरा।
कष्टपूर्ण भव-ताप हरो इस दास रा।।

रमणीयक छंद विधान -

वर्ण राख कर पंच दशं "रनभाभरा"।
छंद राच 'रमणीयक' हो मन बावरा।।

"रनभाभरा" = रगण नगण भगण भगण रगण।

212 111 211 211 212 = 15 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण, दो दो या चारों समतुकांत।

रमेश छंद "नन्ही गौरैया"

फुदक रही हो तरुवर डाल।
सुन चिड़िया दे कह निज हाल।।
उड़ उड़ छानो हर घर रोज।
तुम करती क्या नित नव खोज।।

चितकबरी रंगत लघु काय।
गगन परी सी हृदय लुभाय।।
दरखत पे तो कबहु मुँडेर।
फुर फुर जाती करत न देर।।

मधुर सुना के तुम सब गीत।
वश कर लेती हर घर जीत।।
छत पर दाना जल रख लोग।
कर इसका ले रस उपभोग।।

चहक बजाती मधुरिम साज।
इस चिड़िया का सब पर राज।।
नटखट नन्ही मन बहलाय।
अब इसको ले जगत बचाय।।

रमेश छंद विधान -

"नयनज" का दे गण परिवेश।
रचहु सुछंदा मृदुल 'रमेश'।।

"नयनज" = [नगण यगण नगण जगण]

(111 122 111 121) = 12 वर्ण का वर्णिक छंद, 4 चरण, दो-दो चरण समतुकांत।

रसना छंद "पथिक आह्वाहन"

डगर कहे चीख, जरा ठहर पथिक सुनो।
कठिन सभी मार्ग, सदैव कर मनन चुनो।।
जगत भरा कंट, परन्तु तुम सँभल चलो।
तमस भरी रात, प्रदीप बन स्वयम जलो।।

दुखमय संसार, अभाव अधिकतर सहे।
सुखमय तो मात्र, कुछेक सबल जन रहे।।
रह उनके साथ, विनष्ट यह जग जिनका।
कुछ करके काज, बसा घर नवल उनका।।

तुम कर के पान, समस्त दुख विपद बढ़ो।
गिरि सम ये राह, बना सरल सुगम चढ़ो।।
तुम रख सौहार्द्र, सुकार्य अबल-हित करो।
इस जग में धीर, सुवीर बन कर उभरो।।

विकृत हुआ देश, हवा बहत अब पछुआ।
सब चकनाचूर, यहाँ ऋषि-अभिमत हुआ।।
तुम बन आदर्श, कदाचरण सकल हरो।
यह फिर से देश, समृद्ध पथिक तुम करो।।

रसना छंद विधान -

"नयसननालाग", रखें सत अरु दश यतिं।
मधु 'रसना' छंद, रचें ललित मृदुल गतिं।

"नयसननालाग" = नगण यगण सगण नगण नगण लघु गुरु।

111 122 1,12 111 111 12 = 17 वर्ण का वर्णिक छंद, यति 7 और10 वर्णों पर, 4 पद, दो-दो पद समतुकांत।

रसाल छंद "यौवन"

यौवन जब तक द्वार, रूप रस गंध सुहावत।
बीतत दिन जब चार, नाँहि मन को कछु भावत।।
वैभव यह अनमोल, व्यर्थ मत खर्च इसे कर।
वापस कबहु न आय, खो अगर दे इसको नर।।

यौवन सरित समान, वेगमय चंचल है अति।
धीर हृदय मँह धार, साध नर ले इसकी गति।।
हो कर इस पर चूर, जो बढ़त कार्य बिगारत।
जो पर चलत सधैर्य, वो सकल काज सँवारत।।

यौवन सब सुख सार, स्वाद तन का यह पावन।
ये नित रस परिपूर्ण, ज्यों बरसता मधु सावन।।
दे जब तक यह साथ, सृष्टि लगती मनभावन।
जर्जर जब तन होय, घोर तब दे झुलसावन।।

कांति चमक अरु वीर्य, पूर्ण जब देह रहे यह।
मानव कर तु उपाय, पार भव हो जिनसे यह।।
रे नर जनम सुधार, यत्न करके जग से तर।
जीवन यह उपहार, व्यर्थ इसको मत तू कर।।

रसाल छंद विधान -

"भानजभजुजल" वर्ण, और यति नौ दश पे रख।
पावन मधुर 'रसाल', छंद-रस रे नर तू चख।।

"भानजभजुजल" = भगण नगण जगण भगण जगण जगण लघु।

211 111 121 // 211 121 121 1 = 19 वर्ण का वर्णिक छंद, यति 9 और 10 वर्ण पर, दो दो या चारों पद समतुकांत।

(इसका मात्राविन्यास रोला छंद से मिलता है। रसाल गणाश्रित छंद है अतः हर वर्ण की मात्रा नियत है जबकि रोला मात्रिक छंद है और ऐसा बन्धन नहीं है।)

रुचि छंद "कालिका स्तवन"

माँ कालिका, लपलप जीभ को लपा।
दुर्दान्तिका, रिपु-दल की तु रक्तपा।।
माहेश्वरी, खड़ग धरे हुँकारती।
कापालिका, नर-मुँड माल धारती।।

तू मुक्त की, यह महि चंड मुंड से।
विच्छेद के, असुरन माथ रुंड से।।
गूँजाय दी, फिर नभ अट्टहास से।
थर्रा गये, तब त्रयलोक त्रास से।।

तू हस्त में, रुधिर कपाल राखती।
आह्लादिका,असुर-लहू चाखती।।
माते कृपा, कर अवरुद्ध है गिरा।
पापों भरे, जगत-समुद्र से तिरा।।

हो सिंह पे, अब असवार अम्बिका।
संसार का, सब हर भार चण्डिका।।
मातेश्वरी, वरद कृपा अपार दे।
निस्तारिणी, जगजननी तु तार दे।।

रुचि छंद विधान -

"ताभासजा, व ग" यति चार और नौ।
ओजस्विनी, यह 'रुचि' छंद राच लौ।।

"ताभासजा, व ग" = तगण भगण सगण जगण गुरु।

(221 2,11 112 121 2) = 13 वर्ण का वर्णिक छंद, 4 पद, यति 4 और 9 वर्ण पर, चार पद, दो-दो पद समतुकांत।

रोचक छंद "फागुन मास"

फागुन मास सुहावना आया।
मौसम रंग गुलाल का छाया।।
पुष्प लता सब फूल के सोहे।
आज बसन्त लुभावना मोहे।।

ये ऋतुराज बड़ा मनोहारी।
दग्ध करे मन काम-संचारी।।
यौवन भार लदी सभी नारी।
फागुन के रस भीग के न्यारी।।

आज छटा ब्रज में नई राचे।
खेलत फाग सभी यहाँ नाचे।।
गोकुल ग्राम उछाह में झूमा।
श्याम यहाँ हर राह में घूमा।।

कोयल बागन बीच में कूँजे।
श्यामल भंवर बौर पे गूँजे।।
शीत विदा अब माँगके जाए।
ग्रीष्म पसारत पाँव को आए।।

रोचक छंद विधान -

"भाभरगागा" रचें सभी भाई।
'रोचक' छंद सजे तभी आई।।

"भाभरगागा" = भगण भगण रगण गुरु गुरु

211 211 212 22 = 11 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण। दो दो समतुकांत।

वंशस्थ छंद "शीत-वर्णन"

तुषार आच्छादित शैल खण्ड है।
समस्त शोभा रजताभ मण्ड है।।
प्रचण्डता भीषण शीत से पगी।
अलाव तापें यह चाह है जगी।।

समीर भी है सित शीत से महा।
प्रसार ऐसा कि न जाय ही सहा।।
प्रवाह भी है अति तीव्र वात का।
प्रकम्पमाना हर रोम गात का।।

व्यतीत ज्यों ही युग सी विभावरी।
हरी भरी दूब तुषार से भरी।।
लगे कि आयी नभ को विदारके।
उषा गले मौक्तिक हार धार के।।

लगा कुहासा अब व्योम घेरने।
प्रभाव हेमंत लगा बिखेरने।।
खिली हुई धूप लगे सुहावनी।
सुरम्य आभा लगती लुभावनी।।

वंशस्थ छंद विधान -

"जताजरौ" द्वादश वर्ण साजिये।
प्रसिद्ध 'वंशस्थ' सुछंद राचिये।।

"जताजरौ" = जगण, तगण, जगण, रगण।

121 221 121 212 = 12 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण, दो दो या चारों चरण समतुकांत।)

वरूथिनी छंद "प्रदीप हो"

प्रचंड रह, सदैव बह, कभी न तुम, अधीर हो।
महान बन, सदा वतन, सुरक्ष रख, सुवीर हो।।
प्रयत्न कर, बना अमर, अटूट रख, अखंडता।
कभी न डर, सदैव धर, रखो अतुल, प्रचंडता।।

निशा प्रबल, सभी विकल, मिटा तमस, प्रदीप हो।
दरिद्र जन, न वस्त्र तन, करो सुखद, समीप हो।।
सुकाज कर, गरीब पर, सदैव तुम, दया रखो।
मिटा विपद, उन्हें सुखद, बना सरस, सुधा चखो।।

हुँकार भर, दहाड़ कर, जवान तुम, बढ़े चलो।
त्यजो अलस, न हो विवस, मशाल बन, सदा जलो।।
अराति गर, उठाय सर, दबोच तुम, उसे वहीं।
धरो पकड़, रखो जकड़, उसे भगन, न दो कहीं।।

प्रशस्त नभ, करो सुलभ, सभी डगर, बिना रुके।
रहो सघन, डिगा न मन, बढ़ो युवक, बिना झुके।।
हरेक थल, रहो अटल, विचार नित, नवीन हो।
बढ़ा वतन, छुवा गगन, सभी जगह, प्रवीन हो।।

वरूथिनी छंद विधान -

"जनाभसन,जगा" वरण, सुछंद रच, प्रमोदिनी।
विराम सर,-त्रयी सजत, व चार पर, 'वरूथिनी'।।

"जनाभसन,जगा" = जगण नगण भगण सगण नगण जगण गुरु।

विराम सर,-त्रयी सजत = सर यानी बाण जो पाँच की संख्या का भी द्योतक है। सर-त्रयी यानी 5, 5, 5।

121 11,1 211 1,12 111, 121 2 = 19 वर्ण का वर्णिक छंद। 4 पद, क्रमशः 5, 5, 5, 4 वर्ण पर यति, दो-दो पद समतुकांत।

वर्ष छंद "बाल कविता"

बिल्ली रानी आवत जान।
चूहा भागा ले कर प्रान।।
आगे पाया साँप विशाल।
चूहे का जो काल कराल।।

नन्हा चूहा हिम्मत राख।
जल्दी कूदा ऊपर शाख।।
बेचारे का दारुण भाग।
शाखा पे बैठा इक काग।।

पत्तों का डाली पर झुण्ड।
जा बैठा ले भीतर मुण्ड।।
कौव्वा बोले काँव कठोर।
चूँ चूँ से दे उत्तर जोर।।

ये है गाथा केवल एक।
देती शिक्षा पावन नेक।।
बच्चों हारो हिम्मत नाय।
लाखों चाहे संकट आय।।

वर्ष छंद विधान -

"माताजा" नौ वर्ण सजाय।
प्यारी छंदा 'वर्ष' लुभाय।।

"माताजा" = मगण तगण जगण।

222 221 121 = 9 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण, दो दो समतुकांत।

वसन्ततिलका छंद "मनोकामना"

मैं पुण्य भारत धरा, पर जन्म लेऊँ।
संस्कार वैदिक मिले, सब देव सेऊँ।।
यज्ञोपवीत रखके, नित नेम पालूँ।
माथे लगा तिलक मैं, रख गर्व चालूँ।।

गीता व मानस करे, दृढ़ राह सारी।
सत्संग प्राप्ति हर ले, भव-ताप भारी।।
सिद्धांत विश्व-हित के, मन में सजाऊँ।
हिंसा प्रवृत्ति रख के, न स्वयं लजाऊँ।।

सारी धरा समझ लूँ, परिवार मेरा।
हो नित्य ही अतिथि का, घर माँहि डेरा।।
देवों समान उनको, समझूँ सदा ही।
मैं आर्ष रीति विधि का, बन जाउँ वाही।।

प्राणी समस्त सम हैं, यह भाव राखूँ।
ऐसे विचार रख के, रस दिव्य चाखूँ।।
हे नाथ! पूर्ण करना, मन-कामना को।
मेरी सदैव रखना, दृढ भावना को।।

वसन्ततिलका छंद विधान -

"ताभाजजागगु" गणों पर वर्ण राखो।
प्यारी 'वसन्ततिलका' तब छंद चाखो।।

"ताभाजजागगु" = तगण, भगण, जगण, जगण और दो गुरु।

221 211 121 121 22 = 14 वर्ण प्रति चरण का वर्णिक छंद। चार चरण, दो दो समतुकांत। यति 8, 6 वर्ण पर रखने से छंद मधुर लगता है पर आवश्यक नहीं है। उदाहरण देखिए।

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां में कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च।।
(सुंदरकांड)

विमलजला छंद "राम शरण"

जग पेट भरण में।
रत पाप करण में।।
जग में यदि अटका।
फिर तो नर भटका।।

मन ये विचलित है।
प्रभु-भक्ति रहित है।।
अति दीन दुखित है।
हरि-नाम विहित है।।

तन पावन कर के।
मन शोधन कर के।।
लग राम चरण में।
गति ईश शरण में।।

कर निर्मल मति को।
भज ले रघुपति को।।
नित राम सुमरना।
भवसागर तरना।।

विमलजला छंद विधान -

"सनलाग" वरण ला।
रचलें 'विमलजला'।।

"सनलाग" = सगण नगण लघु गुरु।

112 111 12 = 8 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण। दो दो समतुकांत

विमला छंद "सच्चा सुख"

मन का मारो रावण सब ही।
लगते सारे पावन तब ही।।
सब बाधाओं की मन जड़ है।
बस में ये तो वैभव-झड़ है।।

त्यज दो तृष्णा मत्सर मन से।
जग की सेवा लो कर तन से।।
सब का सोचो नित्य तुम भला।
यह जीने की उच्चतम कला।।

जग-ज्वाला से प्राण सिहरते।
पर-पीड़ा से लोचन भरते।।
लखता जो संसार बिलखता।
दुखियों का वो दर्द समझता।।

जग की पीड़ा जो नर हरता।
अबलों की रक्षा नित करता।।
सबके प्यासे नैन निरखता।
नर वो ही सच्चा सुख चखता।।

विमला छंद विधान -

"समनालागा" वर्ण सब रखो।
'विमला' प्यारी छंद रस चखो।।

"समनालागा"= सगण मगण नगण लघु गुरु।

112 222 111 12 = 11 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण। दो दो समतुकांत।

शारदी छंद "चले चलो पथिक"

चले चलो पथिक।
बिना थके रथिक।।
थमे नहीं चरण।
भले हुवे मरण।।

सुहावना सफर।
लुभावनी डगर।।
बढ़ा मिलाप चल।
सदैव हो अटल।।

रहो सदा सजग।
उठा विचार पग।।
तुझे लगे न डर।
रहो न मौन धर।।

प्रसस्त है गगन।
उड़ो महान बन।।
समृद्ध हो वतन।
रखो यही लगन।।

शारदी छंद विधान -

"जभाल" वर्ण धर।
सु'शारदी' मुखर।।

"जभाल" = जगण भगण लघु

(121 211 1) = 7 वर्ण का वर्णिक छंद, 4 चरण, दो दो समतुकांत।

शार्दूलविक्रीडित छंद "हिन्दी यशोगान"

हिन्दी भारत देश के गगन में, राकेश सी राजती।
भाषा संस्कृत दिव्य हस्त इस पे, राखे सदा साजती।।
सारे प्रांत रखे कई विविधता, देती उन्हे एकता।
हिन्दी से पहचान है जगत में, देवें इसे भव्यता।।

ये उच्चारण खूब ही सुगम दे, जैसा लिखो वो पढ़ो।
जो भी संभव जीभ से कथन है, वैसा इसी में गढ़ो।।
ये चौवालिस वर्ण और स्वर की, भाषा बड़ी सोहनी।
हिन्दी को हम मान दें हृदय से, ये विश्व की मोहनी।।

छंदों को गतिशीलता मधुर दे, ये भाव संचार से।
भावों को रस, गंध, रूप यह दे, नाना अलंकार से।।
शब्दों का सुविशाल कोष रखती, ये छंद की खान है।
गीता, वेद, पुरान, शास्त्र- रस के, संगीत की गान है।।

मीरा ने इसमें रचे भजन हैं, ये सूर की तान है।
हिन्दी पंत, प्रसाद और तुलसी, के काव्य का पान है।।
मीठी ये गुड़ के समान लगती, सुस्वाद सारे चखें।
हिन्दी का हम शीश विश्व भर में, ऊँचा सभी से रखें।।

शार्दूलविक्रीडित छंद विधान -

"मासाजा सतताग" वर्ण दश नौ, बारा व सप्ता यतिम्।
राचूँ छंद रसाल चार पद की, 'शार्दूलविक्रीडितम्'।।

"मासाजा सतताग" = मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण और गुरु।

222 112 121 112// 221 221 2 = कुल 19 वर्ण प्रति पद का वर्णिक छंद। यति 12 और 7 वर्ण पर है। चार पद, दो दो या चारों पद समतुकांत।

आदौ राम, या कुन्देन्दु, कस्तूरी तिलकं जैसे मनोहारी श्लोकों का जननी छंद।

शालिनी छंद "राम स्तवन"

हाथों में वे, घोर कोदण्ड धारे।
लंका जा के, दैत्य दुर्दांत मारे।।
सीता माता, मान के साथ लाये।
ऐसे न्यारे, रामचन्द्रा सुहाये।।

मर्यादा के, आप हैं नाथ स्वामी।
शोभा न्यारी, रूप नैनाभिरामी।।
चारों भाई, साथ सीता अनूपा।
बांकी झांकी, दिव्य है शांति-रूपा।।

प्राणी भू के, आप के गीत गायें।
सारे देवा, साम गा के रिझायें।।
भक्तों के हो, आप ही दुःख हारी।
पूरी की है, दीन की आस सारी।।

माता रामो, है पिता रामचन्द्रा।
स्वामी रामो, है सखा रामचन्द्रा।।
हे देवों के, देव मेरे दुलारे।
मैं तो जीऊँ, आप ही के सहारे।।

शालिनी छंद विधान -

राचें बैठा, सूत्र "मातातगागा"।
गावें प्यारी, 'शालिनी' छंद रागा।।

"मातातगागा"= मगण, तगण, तगण, गुरु, गुरु।

222 221 221 22 = 11 वर्ण का वर्णिक छंद। यति चार वर्ण पर देने से छंद लय युक्त होता है। चार चरण, दो दो समतुकांत।

शिखरिणी छंद "भारत वंदन"

बड़ा ही प्यारा है, जगत भर में भारत मुझे।
सदा शोभा गाऊँ, पर हृदय की प्यास न बुझे।।
तुम्हारे गीतों को, मधुर सुर में गा मन भरूँ।
नवा माथा मेरा, चरण-रज माथे पर धरूँ।।

यहाँ गंगा गर्जे, हिमगिरि उठा मस्तक रखे।
अयोध्या काशी सी, वरद धरणी का रस चखे।।
यहाँ के जैसे हैं, सरित झरने कानन कहाँ।
बिताएँ सारे ही, सुखमय सदा जीवन यहाँ।।

दया की वीणा के, मुखरित हुये हैं स्वर जहाँ।
सभी विद्याओं में, अति पटु रहे हैं नर जहाँ।।
उसी की रक्षा में, तन मन लगा तत्पर रहूँ।
जरा भी बाधा हो, अगर इसमें तो हँस सहूँ।।

खुशी के दीपों की, जगमग यहाँ लौ नित जगे।
हमें प्राणों से भी, अधिक प्रिय ये भारत लगे।।
प्रतिज्ञा ये धारूँ, दुखित जन के मैं दुख हरूँ।
इन्हीं भावों को ले, 'नमन' तुम को अर्पित करूँ।।

शिखरिणी छंद विधान -

रखें छै वर्णों पे, यति "यमनसाभालगा" रचें।
चतुष् पादा छंदा, सब 'शिखरिणी' का रस चखें।।

"यमनसाभालगा" = यगण, मगण, नगण, सगण, भगण लघु गुरु।

122 222, 111 112 211 12 = कुल 17 वर्ण का वर्णिक छंद। यति 6 वर्ण पर, चार पद, दो दो पद समतुकांत।

(शिव महिम्न श्लोक इसी छंद में है।)

शीर्षा छंद / शिष्या छंद "शैतानी धारा"

शैतानी जो थी धारा।
जैसे कोई थी कारा।।
दाढों में घाटी सारी।
भारी दुःखों की मारी।।

लूटों का बाजे डंका।
लोगों में थी आशंका।।
हत्याएँ मारामारी।
सांसों पे वे थी भारी।।

भोले बाबा की मर्जी।
वैष्णोदेवी माँ गर्जी।।
घाटी की होनी जागी।
आतंकी धारा भागी।।

कश्मीरी की आज़ादी।
उन्मादी की बर्बादी।।
रोयेंगे पाकिस्तानी।
गायेंगे हिंदुस्तानी।।

शीर्षा छंद / शिष्या छंद विधान -

शीर्षा छंद जो कि शिष्या छंद के नाम से भी जाना जाता है, ७ वर्ण प्रति चरण का वर्णिक छंद है।

"मामागा" कोई राखे।
'शीर्षा' छंदस् वो चाखे।।

"मामागा" = मगण मगण गुरु

222 222 2 = 7 दीर्घ वर्ण का वर्णिक छंद। दो-दो चरण समतुकांत।

शुभमाल छंद "दीन पुकार"

सभी हम दीन।
निहायत हीन।।
हुए असहाय।
नहीं कुछ भाय।।

गरीब अमीर।
नदी द्वय तीर।।
न आपस प्रीत।
यही जग रीत।।

नहीं सरकार।
रही भरतार।।
अतीव हताश।
दिखे न प्रकाश।।

झुकाय निगाह।
भरें बस आह।।
सहें सब मौन।
सुने वह कौन।।

सभी दिलदार।
हरें कुछ भार।।
कृपा कर आज।
दिला कछु काज।।

मिला कर हाथ।
चलें सब साथ।।
सही यह मन्त्र।
तभी गणतन्त्र।।

शुभमाल छंद विधान -

"जजा" गण डाल।
रचें 'शुभमाल'।।

"जजा" = जगण जगण

(121 121) = 6 वर्ण प्रति चरण का वर्णिक छंद, चार चरण, दो - दो चरण समतुकांत।

शोभावती छंद "हिन्दी भाषा"

देवों की भाषा से जन्मी हिन्दी।
हिन्दुस्तां के माथे की है बिन्दी।।
दोहों, छंदों, चौपाई की माता।
मीरा, सूरा के गीतों की दाता।।

हिंदुस्तानी साँसों में है छाई।
पाटे सारे भेदों की ये खाई।।
अंग्रेजी में सारे ऐसे पैठे।
हिन्दी से नाता ही तोड़े बैठे।।

भावों को भाषा देती लोनाई।
भाषा से प्राणों की भी ऊँचाई।।
हिन्दी की भू पे आभा फैलाएँ।
सारे हिन्दी के गीतों को गाएँ।।

हिन्दी का लोहा माने भू सारी।
भाषा के शब्दों की शोभा न्यारी।।
ओजस्वी सारे हिन्दी भाषाई।
हिन्दी जो भी बोलें वे हैं भाई।।

शोभावती छंद विधान -

मगण*3 + गुरु

222 222 222 2 = 10 दीर्घ वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण, दो दो समतुकांत।

संयुत छंद "फाग रस"

सब झूम लो रस राग में।
मिल मस्त हो कर फाग में।।
खुशियों भरा यह पर्व है।
इसपे हमें अति गर्व है।।

यह मास फागुन चाव का।
ऋतुराज के मधु भाव का।।
हर और दृश्य सुहावने।
सब कूँज वृक्ष लुभावने ।।

मन से मिटा हर क्लेश को।
उर में रखो मत द्वेष को।।
क्षण आज है न विलाप का।
यह पर्व मेल-मिलाप का।।

मन से जला मद-होलिका।
धर प्रेम की कर-तूलिका।।
हम मग्न हों रस रंग में।
सब झूम फाग उमंग में।।

संयुत छंद विधान -

"सजजाग" ये दश वर्ण दो।
तब छंद 'संयुत' स्वाद लो।।

"सजजाग" = सगण जगण जगण गुरु।

112 121 121 2 = 10 वर्ण का वर्णिक छंद। चार चरण। दो दो समतुकांत

सारवती छंद "विरह वेदना"

वो मनभावन प्रीत लगा।
छोड़ चला मन भाव जगा।।
आवन की सजना धुन में।
धीर रखी अबलौं मन में।।

खावन दौड़त रात महा।
आग जले नहिँ जाय सहा।।
पावन सावन बीत रहा।
अंतस हे सखि जाय दहा।।

मोर चकोर मचावत है।
शोर अकारण खावत है।।
बाग-छटा नहिँ भावत है।
जी अब और जलावत है।।

ये बरखा भड़कावत है।
जो विरहाग्नि बढ़ावत है।।
गीत नहीं मन गावत है।
सावन भी न सुहावत है।।

सारवती छंद विधान -

"भाभभगा" जब वर्ण सजे।
'सारवती' तब छंद लजे।।

"भाभभगा" = भगण भगण भगण + गुरु।

(211 211 211 2) = 10 वर्ण प्रति चरण का वर्णिक छंद, 4 चरण, दो दो समतुकांत।

सिंहनाद छंद "विनती"

हरि विष्णु केशव मुरारी।
तुम शंख चक्र कर धारी।।
मणि वक्ष कौस्तुभ सुहाये।
कमला तुम्हें नित लुभाये।।

प्रभु ग्राह से गज उबारा।
दस शीश कंस तुम मारा।।
गुण से अतीत अविकारी।
करुणा-निधान भयहारी।।

पृथु मत्स्य कूर्म अवतारी।
तुम रामचन्द्र बनवारी।।
प्रभु कल्कि बुद्ध गुणवाना।
नरसिंह वामन महाना।।

अवतार नाथ अब धारो।
तुम भूमि-भार सब हारो।।
हम दीन हीन दुखियारे।
प्रभु कष्ट दूर कर सारे।।

सिंहनाद छंद विधान -

"सजसाग" वर्ण दश राखो।
तब 'सिंहनाद' मधु चाखो।।

"सजसाग" = सगण जगण सगण गुरु

(112 121 112 2) = 10 वर्ण प्रति चरण का वर्णिक छंद, 4 चरण दो दो समतुकांत।

सुमति छंद "भारत देश"

प्रखर भाल पे हिमगिरि न्यारा।
बहत वक्ष पे सुरसरि धारा।।
पद पखारता जलनिधि खारा।
अनुपमेय भारत यह प्यारा।।

यह अनेकता बहुत दिखाये।
पर समानता सकल बसाये।।
विषम रीत हैं अरु पहनावा।
सकल एक हों जब सु-उछावा।।

विविध धर्म हैं, अगणित भाषा।
पर समस्त की यक अभिलाषा।।
प्रगति देश ये कर दिखलाए।
सकल विश्व का गुरु बन छाए।।

हम विकास के पथ-अनुगामी।
सघन राष्ट्र के नित हित-कामी।।
'नमन' देश को शत शत देते।
प्रगति-वाद के परम चहेते।।

सुमति छंद विधान -

गण "नरानया" जब सज जाते।
'सुमति' छंद की लय बिखराते।।

"नरानया" = नगण रगण नगण यगण

(111 212 111 122) = 12 वर्ण प्रति चरण का वर्णिक छंद, 4 चरण, दो दो समतुकांत।

स्रग्धरा छंद "शिव स्तुति"

शम्भो कैलाशवासी, सकल दुखित की, पूर्ण आशा करें वे।
भूतों के नाथ न्यारे, भव-भय-दुख को, शीघ्र सारा हरें वे।।
बाघों की चर्म धारें, कर महँ डमरू, कंठ में नाग साजें।
शाक्षात् हैं रुद्र रूपी, मदन-मद मथे, ध्यान में वे बिराजें।।

गौरा वामे बिठाये, वृषभ चढ़ चलें, आप ऐसे दुलारे।
माथे पे चंद्र सोहे, रजत किरण से, जो धरा को सँवारे।।
भोले के भाल साजे, शुचि सुर-सरिता, पाप की सर्व हारी।
ऐसे न्यारे त्रिनेत्री, विकल हृदय की, पीड़ हारें हमारी।।

काशी के आप वासी, शुभ यह नगरी, मोक्ष की है प्रदायी।
दैत्यों के नाशकारी, त्रिपुर वध किये, घोर जो आततायी।।
देवों की पीड़ हारी, भयद गरल को, कंठ में आप धारे।
देवों के देव हो के, परम पद गहा, सृष्टि में नाथ न्यारे।।

भक्तों के प्राण प्यारे, घट घट बसते, दिव्य आशीष देते।
भोलेबाबा हमारे, सब अनुचर की, क्षेम की नाव खेते।।
कापाली शूलपाणी, असुर लख डरें, भक्त का भीत टारे।
हे शम्भो 'बासु' माथे, वरद कर धरें, आप ही हो सहारे।।

स्त्रग्धरा छंद विधान -

"माराभाना ययाया", त्रय-सत यति दें, वर्ण इक्कीस या में।
बैठा ये सूत्र न्यारा, मधुर रसवती, 'स्त्रग्धरा' छंद राचें।।

"माराभाना ययाया"= मगण, रगण, भगण, नगण, तथा लगातार तीन यगण।

त्रय-सत यति दें= सात सात वर्ण पर यति।

222 212 2,11 111 12,2 122 122 = कुल 21 वर्ण का वर्णिक छंद। चार पद, दो दो पद समतुकांत।

हरिणी छंद "राधेकृष्णा नाम-रस"

मन नित भजो, राधेकृष्णा, यही बस सार है।
इन रस भरे, नामों का तो, महत्त्व अपार है।।
चिर युगल ये, जोड़ी न्यारी, त्रिलोक लुभावनी।
भगत जन के, प्राणों में ये, सुधा बरसावनी।।

जहँ जहँ रहे, राधा प्यारी, वहीं घनश्याम हैं।
परम द्युति के, श्रेयस्कारी, सभी परिणाम हैं।।
बहुत महिमा, नामों की है, इसे सब जान लें।
सब हृदय से, संतों का ये, कहा सच मान लें।।

अति व्यथित हो, झेलूँ पीड़ा, गिरा भव-कूप में।
मन विकल है, डूबूँ कैसे, रमा हरि रूप में।।
भुवन भर में, गाथा गाऊँ, सदा प्रभु नाम की।
मन-नयन से, लीला झाँकी, लखूँ ब्रज-धाम की।।

मन महँ रहे, श्यामा माधो, यही अरदास है।
जिस निलय में, दोनों सोहे, वहीं पर रास है।।
युगल छवि की, आभा में ही, लगा मन ये रहे।
'नमन' कवि की, ये आकांक्षा, इसी रस में बहे।।

हरिणी छंद विधान -

मधुर 'हरिणी', राचें बैठा, "नसामरसालगे"।
प्रथम यति है, छै वर्णों पे, चतुष् फिर सप्त पे।

"नसामरसालगे" = नगण, सगण, मगण, रगण, सगण, लघु और गुरु।

111 112, 222 2,12 112 12 = 17 वर्ण प्रति पद का वर्णिक छंद, यति 6, 4 और 7 वर्ण पर, चार पद, दो दो समतुकांत।

घनाक्षरी छंद

बासुदेव अग्रवाल 'नमन'

घनाक्षरी छंद "सृजन के नियम"

घनाक्षरी छंद वर्णिक छंद है जिसमें 30 से लेकर 33 तक वर्ण होते हैं परंतु अन्य वर्णिक छंदों की तरह इसमें गणों का नियत क्रम नहीं है। यह कवित्त के नाम से भी प्रसिद्ध है। घनाक्षरी छंद गणों के और मात्राओं के बंधन में बंधा हुआ छंद नहीं है परंतु इसके उपरांत भी बहुत ही लय युक्त मधुर छंद है और यह लय कुछेक नियमों के अनुपालन से ही सधती है। अतः घनाक्षरी केवल अक्षरों को गिन कर बैठा देना मात्र नहीं है। इसमें साधना की आवश्यकता है तथा ध्यान पूर्वक लय के नियमों के अंतर्गत ही इसका सफल सृजन होता है। मैने इस छंद को नियमबद्ध करने का प्रयास किया है और मुझे विश्वास है कि इन नियमों के अंतर्गत कोई भी गंभीर सृजक लय युक्त निर्दोष घनाक्षरी सृजित कर पायेगा।

किसी भी प्रकार की घनाक्षरी छंद में प्रथम यति 16 वर्ण पर निश्चित है। इस यति को भी यदि कोई चाहे तो 8+8 के दो विभागों में विभक्त कर सकता है। दूसरी यति घनाक्षरी के भेदों के अनुसार 30, 31, 32, या 33 वर्ण पर पड़ती है ओर यह घनाक्षरी का एक पद हो गया। इस यति में भी 8 वर्ण के पश्चात आभ्यांतरिक यति रखी जा सकती है। इस प्रकार के चार पदों का एक छंद होता है और चारों पद समतुकांत होने आवश्यक हैं।
निम्न नियम हर प्रकार की घनाक्षरी के लिए उपयुक्त हैं।

चार चार अक्षरों के, शुरू से बना लो खंड,
अक्षरों का क्रम, एक दोय तीन चार है।

समकल शब्द यदि, एक ती से होय शुरू,
मत्त के नियम का न, सोच व विचार है।

चार से जो शुरू शब्द, 'नगण' या लघु गुरु।
शुरू यदि दो से तब, लघु शुरू भार है।

एक पे समाप्त शब्द, लघु गुरु नित रहे।
'नमन' घनाक्षरी का, बस यही सार है।।

- समकल शब्द यानी 2, 4, 6 अक्षर का शब्द।
- मत्त=मात्रा
- 'नगण' = तीन अक्षर के शब्द में तीनों लघु।

★ खण्ड = 1/ खण्ड = 2/ खण्ड = 3 /खण्ड = 4
★ 1 2 3 4// 1 2 3 4// 1 2 3 4// 1 2 3 4

ऊपर घनाक्षरी की प्रथम यति के16 वर्ण चार चार के खंड में विभाजित किये गए हैं। द्वितीय यति भी इसी प्रकार विभाजित होगी और उनका क्रम भी 1,2,3,4 है। घनाक्षरी के नियम इसी बात पर आधारित हैं कि शब्द खण्ड की किस क्रम संख्या से प्रारंभ हो रहा है अथवा किस क्रम संख्या पर समाप्त हो रहा है। ऊपर के विभाजन को देखने से पता चलता है कि जो नियम प्रथम खण्ड की 1 की संख्या के लिए लागू हैं वे ही नियम पंक्ति के क्रम 5, 9, 13 के लिए भी ठीक हैं।

नियम 1:- समकल शब्द यदि चार अक्षरों के खंड के प्रथम और तृतीय अक्षर से प्रारम्भ होता है तो वह शब्द मात्रा के नियमों से मुक्त है अर्थात उस शब्द में लघु गुरु मात्रा का कुछ भी क्रम रख सकते हैं।

नियम 2:- *"चार से जो शुरू शब्द, 'नगण' या लघु गुरु"*

किसी भी खण्ड की क्रम संख्या 4 से प्रारंभ शब्द के शुरू में लघु गुरु (1 2) रहता है। वह शब्द यदि त्रिकल है तो लघु गुरु से भी प्रारंभ हो सकता है या फिर शब्द में तीनों लघु हो सकते हैं। एकल इस नियम से मुक्त है, यह शब्द दीर्घ या लघु कुछ भी हो सकता है।

नियम 3:- *"शुरू यदि दो से तब, लघु शुरू भार है"*

किसी भी खण्ड की क्रम संख्या 2 से प्रारंभ शब्द सदैव लघु से ही प्रारंभ होता है। परंतु एकल पर यह नियम लागू नहीं है।

नियम 4:- *"एक पे समाप्त शब्द, लघु गुरु नित रहे"*

इस बात को थोड़ा ध्यान पूर्वक समझें कि क्रम संख्या 1 पर समाप्त शब्द सदैव लघु गुरु (1 2) से समाप्त होना चाहिए। परन्तु प्रथम खण्ड के 1 पर तो लघु गुरु 2 अक्षरों की गुंजाइश नहीं है तो इसका अर्थ यह है कि वह शब्द एकल है और सदैव दीर्घ जैसे 'है' 'जो' 'ज्यों' इत्यादि ही रहेगा। खण्ड की क्रम संख्या 1 से प्रारंभ एकल शब्द लघु जैसे 'न' 'व' इत्यादि नहीं हो सकता। तो एकल यदि किसी भी खंड के प्रथम स्थान पर है तो वह सदैव दीर्घ रहता है, अन्यथा एकल इस नियम से मुक्त है। यानी अन्य स्थानों पर एकल लघु या दीर्घ कुछ भी हो सकता है। दूसरी बात यह कि खण्ड 2, 3,4 की क्रम संख्या 1 पर समाप्त शब्द यदि एक से अधिक अक्षर का है तो उस शब्द का अंत सदैव लघु गुरु (1 2) से होना चाहिए। जैसे 'सदा', 'संपदा' 'लुभावना' आदि। एक पंक्ति देखें -

"हाय तोहरा लजाना, है लुभावना सुहाना"

इसके अतिरिक्त किसी भी खण्ड के प्रारंभ के त्रिकल शब्द में गणों का अनुशासन भी आवश्यक है। किसी भी खण्ड का 1 से 3 का त्रिकल शब्द मध्य गुरु का न रखें, इससे लय में व्यवधान उत्पन्न होता है। यानी कोई भी खण्ड जगण, तगण, यगण या मगण से प्रारंभ न हो। यह अनुशासन केवल पूर्ण त्रिकल के लिए है, यदि यह त्रिकल दो शब्दों से बनता है तो यह अनुशासन लागू नहीं है।

मात्रा मैत्री निभानी भी आवश्यक है। यदि एक विषमकल शब्द आता है तो उसके तुरन्त बाद दूसरा विषमकल शब्द आये जिससे दोनों मिल कर समकल हो जाये। क्योंकि घनाक्षरी का प्रवाह समकल पर आधारित है। परन्तु दो विषमकलों के मध्य 12 से शुरू होनेवाला शब्द आ सकता है। जैसे मेरी एक होलियारों की मस्ती का वर्णन करती घनाक्षरी देखें।

होली की मची है धूम, रहे होलियार झूम,
मस्त है मलंग जैसे, डफली बजात है।
हाथ उठा आँख मींच, जोगिया की तान खींच,
मुख से अजीब कोई, स्वाँग को बनात है।
रंगों में हैं सराबोर, हुड़दंग पुरजोर,
शिव के गणों की जैसे, निकली बरात है।
ऊँच-नीच सारे त्याग, एक होय खेले फाग,
'बासु' कैसे एकता का, रस बरसात है।।

'की मची है', 'के गणों की' में दो विषमकलों के मध्य 12 से शुरू होने वाले शब्द को देखें। साथ ही 'मची' और 'गणों' क्रमांक 1 पर समाप्त होने वाले शब्द हैं जो लघु गुरु हैं। और भी बताए हुये नियमों पर गौर करें। मुझे आशा है इन नियमों का पालन करते हुए आप सफल घनाक्षरी छंद का सृजन कर सकेंगे।

घनाक्षरी छंद "विभेद"

घनाक्षरी छंद पाठक या श्रोता के मन पर पूर्व के मनोभावों को हटाकर अपना प्रभाव स्थापित कर अपने अनुकूल बना लेनेवाला छंद है। घनाक्षरी में शब्द प्रवाह इस तरह होता है मानो मेघ की गर्जन हो रही हो। साथ ही इसमें शब्दों की बुनावट सघन होती है जैसे एक को ठेलकर दूसरा शब्द आने की जल्दी में हो। शायद इसके नाम के पीछे यही सभी कारण रहे होंगे। घनाक्षरी छंद के कई भेदों के उदाहरण मिलते हैं।

(1) मनहरण घनाक्षरी विधान :-

मनहरण घनाक्षरी को घनाक्षरी छंदों का सिरमौर कहें तो अनुचित नहीं होगा। चार पदों के इस छंद में प्रत्येक पद में कुल वर्ण संख्या 31 होती है। घनाक्षरी एक वर्णिक छंद है अतः वर्णों की संख्या 31 वर्ण से न्यूनाधिक नहीं हो सकती। चारों पदों में समतुकांतता होनी आवश्यक है। 31 वर्ण लंबे पद में 16, 15 पर यति रखना अनिवार्य है। पदान्त हमेशा दीर्घ वर्ण ही रहता है।

परन्तु देखा गया है कि 8,8,8,7 के क्रम में यति तथा पदान्त ह्रस्व-दीर्घ (12) रखने से वाचन में सहजता और अतिरिक्त निखार अवश्य आता है। पर ये दोनों ही बातें विधानानुसार आवश्यक नहीं है।

(2) जनहरण घनाक्षरी विधान :-

चार पदों के इस छंद में प्रत्येक पद में कुल वर्ण संख्या 31 होती है। इसमें पद के प्रथम 30 वर्ण लघु रहते हैं तथा केवल पदान्त दीर्घ रहता है। घनाक्षरी एक वर्णिक छंद है अतः वर्णों की संख्या 31 वर्ण से न्यूनाधिक नहीं हो सकती। चारों पदों में समतुकांतता होनी आवश्यक है। 31 वर्ण लंबे पद में 16, 15 पर यति रखना अनिवार्य है।

परन्तु देखा गया है कि 8,8,8,7 के क्रम में यति रखने से वाचन में सहजता और अतिरिक्त निखार अवश्य आता है, पर ये विधानानुसार आवश्यक नहीं है।

(3) रूप घनाक्षरी विधान :-

➔ कुल वर्ण संख्या = 32
➔ 16, 16 पर यति अनिवार्य। 8,8,8,8 के क्रम में लिखें तो और अच्छा।
➔ पदान्त हमेशा गुरु लघु (2 1)।

(4) जलहरण घनाक्षरी विधान :-

➔ कुल वर्ण संख्या = 32
➔ 16, 16 पर यति अनिवार्य। 8,8,8,8 के क्रम में लिखें तो और अच्छा।
➔ पदान्त हमेशा लघु लघु (1 1)।

(5) मदन घनाक्षरी विधान :-

- ➔ कुल वर्ण संख्या = 32
- ➔ 16, 16 पर यति अनिवार्य। 8,8,8,8 के क्रम में लिखें तो और अच्छा।
- ➔ पदान्त हमेशा गुरु गुरु (2 2)।

(6) डमरू घनाक्षरी विधान :-

- ➔ कुल वर्ण संख्या = 32, सभी मात्रा रहित वर्ण आवश्यक।
- ➔ 16, 16 पर यति अनिवार्य।
- ➔ 8,8,8,8 के क्रम में लिखें तो और अच्छा।

(7) कृपाण घनाक्षरी विधान :-

- ➔ कुल वर्ण संख्या 32
- ➔ 8, 8, 8, 8 पर यति अनिवार्य।
- ➔ पदान्त हमेशा गुरु लघु (2 1)।
- ➔ हर यति समतुकांत होनी आवश्यक। एक पद में चार यति होती है। इस प्रकार 16 यति समतुकांत होगी।

(8) विजया घनाक्षरी विधान :-

- ➔ कुल वर्ण संख्या 32
- ➔ 8, 8, 8, 8 पर यति अनिवार्य।
- ➔ पदान्त हमेशा लघु गुरु (1 2) अथवा 3 लघु (1 1 1) आवश्यक।
- ➔ आंतरिक तुकान्तता के दो रूप प्रचलित हैं। प्रथम हर पद की तीनों आंतरिक यति समतुकांत। दूसरा समस्त 16 की 16 यति समतुकांत। आंतरिक यतियाँ भी पदान्त यति (1 2) या (1 1 1) के अनुरूप रखें तो उत्तम।

(9) हरिहरण घनाक्षरी विधान :-

- ➔ कुल वर्ण संख्या 32
- ➔ 8, 8, 8, 8 पर यति अनिवार्य।
- ➔ पदान्त हमेशा लघु लघु (1 1) आवश्यक।
- ➔ आंतरिक तुकान्तता के दो रूप प्रचलित हैं। प्रथम हर पद की तीनों आंतरिक यति समतुकांत। दूसरा समस्त 16 की 16 यति समतुकांत।

(10) देव घनाक्षरी विधान :-

- ➔ कुल वर्ण = 33
- ➔ 8, 8, 8, 9 पर यति अनिवार्य।
- ➔ पदान्त हमेशा 3 लघु (1 1 1) आवश्यक। यह पदान्त भी पुनरावृत रूप में जैसे 'चलत चलत' रहे तो उत्तम।

(11) सूर घनाक्षरी विधान :-

- कुल वर्ण = 30
- 8, 8, 8, 6 पर यति अनिवार्य।
- पदान्त की कोई बाध्यता नहीं, कुछ भी रख सकते हैं।

कृपाण घनाक्षरी छंद "विनती"

जगत ये पारावार, फंस गया मझधार,
दिखे नहीं आर-पार, थाम प्रभु पतवार।

नहीं मैं समझदार, जानूँ नहीं व्यवहार,
कैसे करूँ मनुहार, करले तु अंगीकार।

चारों ओर भ्रष्टाचार, बढ़ गया दुराचार,
मच गया हाहाकार, धारो अब अवतार।

छाया घोर अंधकार, प्रभु कर उपकार,
करके तु एकाकार, करो मेरा बेड़ा पार।।

कृपाण घनाक्षरी छंद विधान -

चार पदों के इस छंद में प्रत्येक पद में कुल वर्ण संख्या 32 होती है। पद में 8, 8, 8, 8 वर्ण पर यति रखना अनिवार्य है। पद के चारों चरणों का अंत गुरु वर्ण (S) तथा लघु वर्ण (1) से होना आवश्यक है। हर यति समतुकांत होनी भी आवश्यक है। एक पद में चार यति होती है। इस प्रकार छंद की 16 की 16 यति समतुकांत होगी।

घनाक्षरी एक वर्णिक छंद है अतः वर्णों की संख्या प्रति पद 32 वर्ण से न्यूनाधिक नहीं हो सकती। छंद की सारी यतियाँ समतुकांत होने के कारण चारों पदों में समतुकांतता स्वयंमेव निभेगी।

जनहरण घनाक्षरी छंद "ब्रज-छवि"

मधुवन महकत, शुक पिक चहकत,
जन-मन हरषत, मधु रस बरसे।

कलि कलि सुरभित, गलि गलि मुखरित,
उपवन पुलकित, कण-कण सरसे।

तृषित हृदय यह, प्रभु-छवि बिन दह,
दरश-तड़प सह, निशि दिन तरसे।

यमुन-पुलिन पर, चित रख नटवर,
'नमन' नवत-सर, ब्रज-रज परसे।।

जनहरण घनाक्षरी छंद विधान -

चार पदों के इस छंद में प्रत्येक पद में कुल वर्ण संख्या 31 होती है। इसमें पद के प्रथम 30 वर्ण लघु रहते हैं तथा केवल पदान्त दीर्घ रहता है। घनाक्षरी एक वर्णिक छंद है अतः वर्णों की संख्या 31 वर्ण से न्यूनाधिक नहीं हो सकती। चारों पदों में समतुकांतता होनी आवश्यक है। 31 वर्ण लंबे पद में 16, 15 पर यति रखना अनिवार्य है।

परन्तु देखा गया है कि 8,8,8,7 के क्रम में यति रखने से वाचन में सहजता और अतिरिक्त निखार अवश्य आता है, पर ये विधानानुसार आवश्यक भी नहीं है।

जलहरण घनाक्षरी छंद "सिद्धु पर व्यंग"

जब की क्रिकेट शुरु, बल्ले का था नामी गुरु,
जीभ से बैटिंग करे, अब धुँवाधार यह।

न्योता दिया इमरान, गुरु गया पाकिस्तान,
फिर तो खिलाया गुल, वहाँ लगातार यह।

संग बैठ सेनाध्यक्ष, हुआ होगा चौड़ा वक्ष,
सब के भिगोये अक्ष, मन क्या विचार यह।

बेगाने की ताजपोशी,अबदुल्ला मदहोशी,
देश को लजाय नाचा, किस अधिकार यह।।

जलहरण घनाक्षरी छंद विधान -

चार पदों के इस छंद में प्रत्येक पद में कुल वर्ण संख्या 32 रहती है। घनाक्षरी एक वर्णिक छंद है अतः इसमें वर्णों की संख्या 32 वर्ण से न्यूनाधिक नहीं हो सकती। चारों पदों में समतुकांतता होनी आवश्यक है। 32 वर्ण लंबे पद में 16, 16 पर यति रखना अनिवार्य है। जलहरण घनाक्षरी छंद का पदांत सदैव लघु लघु वर्ण (11) से होना आवश्यक है।

परन्तु देखा गया है कि 8,8,8,8 के क्रम में यति रखने से वाचन में सहजता और अतिरिक्त निखार अवश्य आता है, पर ये विधानानुसार आवश्यक भी नहीं है।

डमरू घनाक्षरी छंद "नटवर छवि"

मन यह नटखट, छण छण छटपट,
मनहर नटवर, कर रख सर पर।

कल न पड़त पल, तन-मन हलचल,
लगत सकल जग, अब बस जर-जर।

चरणन रस चख, दरश-तड़प रख,
तकत डगर हर, नयनन जल भर।

मन अब तरसत, अवयव मचलत,
नटवर रख पत, जनम सफल कर।।

डमरू घनाक्षरी छंद विधान -

यह 32 वर्ण प्रति पद की घनाक्षरी है। ये 32 वर्ण 16 - 16 वर्ण के दो यति खंड में विभक्त रहते हैं। परंतु 8 8 8 8 वर्ण के चार यति खंड में विभक्त करने से छंद की रोचकता बढती है। इस घनाक्षरी की खास बात जो है वह यह है कि ये 32 के 32 वर्ण लघु तथा मात्रा रहित होने चाहिए। सभी घनाक्षरी की तरह इसके भी चारों पद एक ही तुकांतता के रहने चाहिए।

देव घनाक्षरी छंद "सैंयाजी"

(सिंहावलोकन के साथ)

भड़क के ऑफिस से, आज फिर सैंया आए,
लगता पड़ी है डाँटें, बॉस की कड़क कड़क।

कड़क गरजते हैं, घर में ये बिजली से,
वहाँ का दिखाए गुस्सा, यहाँ पे फड़क फड़क।

फड़क के बोले शब्द, दिल भेदे तीर जैसे,
छलनी कलेजा हुआ, करता धड़क धड़क।

धड़क बढ़े है ज्यों ज्यों, आ रहा रुदन भारी,
सुलगे जिया में अब, आग ये भड़क भड़क।।

देव घनाक्षरी छंद विधान -

- कुल वर्ण संख्या = 33
- 8, 8, 8, 9 वर्ण पर यति अनिवार्य।
- पदान्त हमेशा 3 लघु (1 1 1) आवश्यक। यह पदान्त भी पुनरावृत रूप में जैसे 'चलत चलत' रहे तो उत्तम।

मनहरण घनाक्षरी छंद "होली के रंग"

(1)

होली की मची है धूम, रहे होलियार झूम,
मस्त है मलंग जैसे, डफली बजात है।

हाथ उठा आँख मींच, जोगिया की तान खींच,
मुख से अजीब कोई, स्वाँग को बनात है।

रंगों में हैं सराबोर, हुड़दंग पुरजोर,
शिव के गणों की जैसे, निकली बरात है।

ऊँच-नीच सारे त्याग, एक होय खेले फाग,
'बासु' कैसे एकता का, रस बरसात है।।

(2)

फाग की उमंग लिए, पिया की तरंग लिए,
गोरी जब झूम चली, पायलिया बाजती।

बाँके नैन सकुचाय, कमरिया बल खाय,
ठुमक के पाँव धरे, करधनी नाचती।

बिजुरिया चमकत, घटा घोर कड़कत,
कोयली भी ऐसे में ही, कुहुक सुनावती।

पायल की छम छम, बादलों की रिमझिम,
कोयली की कुहु कुहु, पञ्च बाण मारती।।

(3)

बजती है चंग उड़े रंग घुटे भंग यहाँ,
उमगे उमंग व तरंग यहाँ फाग में।

उड़ता गुलाल भाल लाल हैं रसाल सब,
करते धमाल दे दे ताल रंगी पाग में।

मार पिचकारी भीगा डारी गोरी साड़ी सारी,
भरे किलकारी खेले होरी सारे बाग में।

'बासु' कहे हाथ जोड़ खेलो फाग ऐंठ छोड़,
किसी का न दिल तोड़ मन बसी लाग में।।

मनहरण घनाक्षरी "राम महिमा"

शिशु रोये बिन क्षीर, राँझा रोये बिन हीर,
दुआ दे फ़कीर नहीं, पीर कैसे मिटेगी?

नीड़ बिन हीन कीर, वीर बिन शमशीर,
कोई भी तुणीर कैसे, तीर बिन सोहेगी?

शेर बिन सूना गीर, हीन मीन बिन नीर,
जब है जमीर खाली, धीर कैसे आयेगी?

बिन कोई तदवीर, जगे नहीं तकदीर,
राम नहीं सीर कैसे, भव-भीर छूटेगी?

मनहरण घनाक्षरी छंद विधान -

मनहरण घनाक्षरी छंद को घनाक्षरी छंदों का सिरमौर कहें तो अनुचित नहीं होगा। चार पदों के इस छंद में प्रत्येक पद में कुल वर्ण संख्या 31 होती है। घनाक्षरी एक वर्णिक छंद है अतः वर्णों की संख्या 31 वर्ण से न्यूनाधिक नहीं हो सकती। चारों पदों में समतुकांतता होनी आवश्यक है। 31 वर्ण लंबे पद में 16, 15 पर यति रखना अनिवार्य है। पदान्त हमेशा दीर्घ वर्ण ही रहता है।

परन्तु देखा गया है कि 8,8,8,7 के क्रम में यति तथा पदान्त ह्रस्व-दीर्घ (12) रखने से वाचन में सहजता और अतिरिक्त निखार अवश्य आता है। पर ये दोनों ही बातें विधानानुसार आवश्यक नहीं है।

विजया घनाक्षरी छंद "कामिनी"

तम में घिरी यामिनी, चमक रही दामिनी,
पिया में रमी कामिनी, कौन यह सुहासिनी।

आयी मिलने की घड़ी, व्याकुलता लिये बड़ी,
घर से निकल पड़ी, काम-विह्वल मानिनी।

सुनसान डगरिया, तन की न खबरिया,
लचकाय कमरिया, ठुमक चले भाविनी।

मन हरषाय रही, तन को लुभाय रही,
मद छलकाय रही, नार यह उमंगिनी।।

विजया घनाक्षरी छंद विधान -

- 32 वर्ण प्रति पद।
- 8, 8, 8, 8 वर्ण पर यति अनिवार्य।
- प्रत्येक यति के अंत में हमेशा लघु गुरु (1 2) अथवा 3 लघु (1 1 1) आवश्यक।
- आंतरिक तुकान्तता के दो रूप प्रचलित हैं। प्रथम हर चरण की तीनों आंतरिक यति समतुकांत। दूसरा समस्त 16 की 16 यति समतुकांत। आंतरिक यतियाँ भी चरणान्त यति (1 2) या (1 1 1) के अनुरूप रखें तो उत्तम।)

सूर घनाक्षरी छंद "घनाक्षरी सृजन"

मिलते विषम दोय, सम-कल तब होय,
सम ही कवित्त को तो, देत बहाव है।

आदि न जगन रखें, लय लगातार लखें,
अंत्य अनुप्रास से ही, या का लुभाव है।

शब्द रखें भाव भरे, लय ऐसी मन हरे,
भरें अलंकार जा का, खूब प्रभाव है।

गाके देखें बार बार, अटकें न मझधार,
रचिए कवित्त जा से, भाव रिसाव है।।

सूर घनाक्षरी छंद विधान -

चार पदों के इस छंद में प्रत्येक पद में कुल वर्ण संख्या 30 होती है। पद में 8, 8, 8, 6 वर्ण पर यति रखना अनिवार्य है। इस घनाक्षरी में चरणान्त की कोई बाध्यता नहीं, कुछ भी रख सकते हैं।

घनाक्षरी एक वर्णिक छंद है अतः सूर घनाक्षरी में वर्णों की संख्या प्रति पद 30 वर्ण से न्यूनाधिक नहीं हो सकती। चारों पदों में समतुकांतता निभानी आवश्यक है।

सवैया छंद

बासुदेव अग्रवाल 'नमन'

सवैया छंद विधान

सवैया छंद चार चरणों का वर्णिक छंद है जिसके प्रति चरण में 22 से 26 तक वर्ण रहते हैं। चारों चरण समतुकांत होते हैं। सवैया किसी गण पर आश्रित होता है जिसकी 7 या 8 आवृत्ति रहती है। इन्ही आवृत्तियों के प्रारंभ में एक या दो साधारणतया लघु वर्ण और अंत में एक या दो लघु गुरु वर्ण जोड़ कर इस छंद के अनेक विभेद मिलते हैं।

आवृत्ति का रूप या तो गुरु लघु लघु (211) रहता है या फिर गुरु गुरु लघु (221) और यही सवैया छंद की विशेषता है और इसके माधुर्य का कारण है। इस आवृत्ति से एक लय का सृजन होता है जो समस्त भगण (211) आश्रित सवैयों की एक समान क्षिप्र गति की रहती है और तगण (221) आश्रित सवैयों की एक समान मन्द गति की रहती है।

हिन्दी के भक्तिकाल और रीतिकाल से ही विभिन्न प्रकार के सवैये प्रचलित रहे हैं। तुलसी की कवितावली में विभिन्न प्रकार के सवैये मिलते हैं। उन्होंने एक ही सवैये में एक से अधिक प्रकार के सवैये मिला कर अनेक उपजाति सवैये भी रचे हैं।

रीतिकालीन कवियों जैसे पद्माकर, देव आदि ने श्रृंगार रस के विभिन्न अंगों, विभाव, अनुभाव, आलम्बन, उद्दीपन, संचारी, नायक-नायिका भेद आदि के लिए इनका चित्रात्मक तथा भावात्मक प्रयोग किया है। रसखान, घनानन्द, केशव जैसे प्रेमी-भक्त कवियों ने भक्ति-भावना के उद्वेग तथा आवेग की सफल अभिव्यक्ति सवैया में की है। भूषण ने वीर रस के लिए इस छंद का प्रयोग किया है। आधुनिक कवियों में हरिश्चन्द्र, जगन्नाथ रत्नाकर, दिनकर ने इनका सुन्दर प्रयोग किया है।

सवैया छंद में उर्दू की ग़ज़ल की तरह गुरु वर्ण को लघु मानने की परंपरा रही है। लगभग तुलसी से लेकर आधुनिक कवियों तक, समस्त कवि गण ने निशंकोच सवैयों में यह छूट ली है। कुछेक छंदों में यह मान्य है कि कारक की विभक्तियों के एकाक्षरी शब्द लघु की तरह व्यवहार में लाये जा सकते हैं। जैसे-

- ☐ कर्ता - ने को न की तरह उच्चारित किया जा सकता है।
- ☐ कर्म - को इसे क पढ़ा जा सकता है।
- ☐ करण, अपादान - से स की तरह पढ़ सकते हैं।
- ☐ सम्बन्ध - का, के, की के लिए भी मात्र क कहा जा सकता है।
- ☐ अधिकरण - में, पे आदि क्रमशः मँ और प की तरह उच्चारित हो सकते हैं।

इसके अतिरिक्त एक शब्द की सहायक क्रियाएँ, सर्वनाम और अव्यय शब्द जैसे है, हैं, था, ही, भी, जो, तो इत्यादि भी आवश्यकतानुसार लघु माने जाते रहे हैं।

अब कुछ प्रमुख कवियों के ऐसे प्रयोग के उदाहरण देखें।

जहाँ सब संकट, दुर्गट सोचु, तहाँ मे'रो' साहे'बु राखै' रमैया॥ (तुलसी कवितावली 'वाम सवैया')

मानुष हौं तो' वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के' ग्वारन।
जो पसु हौं तो' कहा बस मेरो' चरौं नित नंद की' धेनु मँझारन।। (रसखान 'किरीट सवैया')

पैहौं' कहाँ ते' अटारी' अटा, जिनके विधि दीन्ही' है' टूटी' सी' छानी।
जो पै' दरिद्र लिख्यो है' लिलार, तो' काहू' पै' मेटि न जात अजानी।।(नरोत्तम दास 'मत्तगयंद सवैया')

परन्तु आजकल के तथाकथित स्वयंभू आचार्य न जाने क्यों ऐसी एक छूट भी देख रचना को ही सिरे से नकार देते हैं, जो कि इस बहुआयामी छंद के विकास में बाधक ही है।

नीचे भगण आश्रित 14 सवैया छंद और तगण आश्रित 6 सवैया छंद की तालिका दी गई है। चरणान्त के अनुसार विभागों में भी बाँटे गए हैं। कोई चाहे तो एक विभाग के सवैये मिश्रित कर उपजाति सवैये भी रच सकता है।

भगण = 211 आश्रित सवैये

1) मत्तगयन्द सवैया - 211*7 + 22
2) सुन्दरी सवैया - 11+211*7 + 22
3) वाम सवैया - 1+211*7 + 22
4) मोद सवैया - 211*5+222+11+ 22

---

5) मदिरा सवैया - 211*7 + 2
6) दुर्मिल सवैया - 11 +211*7 + 2
7) सुमुखी सवैया - 1 +211*7 + 2

---

8) चकोर सवैया - 211*7 + 21
9) अरविन्द सवैया - 11 +211*7 + 21
10) मुक्ताहरा सवैया - 1+211*7 + 21

---

11) किरीट सवैया - 211*8
12) सुखी सवैया - 11+211*8
13) लवंगलता सवैया - 1+211*8

---

14) अरसात सवैया - 211*7 + 212

तगण = 221 आश्रित सवैये

15) मंदारमाला सवैया - 221*7 + 2
16) गंगोदक सवैया - 21+221*7 + 2
17) वागीश्वरी सवैया - 1+221*7 + 2

---

18) सर्वगामी सवैया - 221*7 + 22
19) भुजंगप्रयात सवैया- 1+221*7+22

---

20) आभार सवैया - 221*8

किरीट सवैया छंद "चेतावनी"

भीतर मत्सर लोभ भरे पर, बाहर तू तन खूब सजावत।
अंतर में मद मोह बसा कर, क्यों फिर स्वांग रचाय दिखावत।
दीन दुखी पर भाव दया नहिँ, आरत हो भगवान मनावत।
पाप घड़ा उर माँहि भरा रख, पागल अंतरयामि रिझावत।।

किरीट सवैया छंद विधान -

यह 24 वर्ण प्रति चरण का एक सम वर्ण वृत्त है। अन्य सभी सवैया छंदों की तरह इसकी रचना भी चार चरण में होती है और सभी चारों चरण एक ही तुकांतता के होने आवश्यक हैं।

यह सवैया भगण (211) पर आश्रित है, जिसकी 8 आवृत्ति प्रति चरण में रहती है। इसका संरचना गुरु लघु लघु × 8 है।

(211 211 211 211 211 211 211 211)

सवैया छंद यति बंधनों में बंधे हुये नहीं होते हैं परंतु किरीट के चरण में 12 - 12 वर्ण के 2 यति खंड रखने से लय की सुगमता रहती है तथा रोचकता भी बढ जाती है। क्योंकि यह एक वर्णिक छंद है अतः इसमें गुरु के स्थान पर दो लघु वर्ण का प्रयोग करना अमान्य है।

दुर्मिल सवैया छंद "शारदा वंदन"

शुभ पुस्तक हस्त सदा सजती, कमलासन श्वेत बिराजत है।
मुख मण्डल तेज सुशोभित है, वर वीण सदा कर साजत है।
नर-नार बसन्तिय पंचम को, सब शारद पूजत ध्यावत है।
तुम हंस सुशोभित हो कर माँ, प्रगटो वर सेवक माँगत है।।

दुर्मिल सवैया छंद विधान -

यह 24 वर्ण प्रति चरण का एक सम वर्ण वृत्त है। अन्य सभी सवैया छंदों की तरह इसकी रचना भी चार चरण में होती है और सभी चारों चरण एक ही तुकांतता के होने आवश्यक हैं।

यह सवैया सगण (112) पर आश्रित है, जिसकी 8 आवृत्ति प्रति चरण में रहती है। इसका संरचना लघु लघु गुरु × 8 है।

(112 112 112 112 112 112 112 112)

सवैया छंद यति बंधनों में बंधे हुये नहीं होते हैं परंतु दुर्मिल के चरण में 12 - 12 वर्ण के 2 यति खंड रखने से लय की सुगमता रहती है। क्योंकि यह एक वर्णिक छंद है अतः इसमें गुरु के स्थान पर दो लघु वर्ण का प्रयोग करना अमान्य है।

मत्तगयंद सवैया छंद "माँ दुर्गा"

(1)

पाप बढ़े चहुँ ओर भयानक हाथ कृपाण त्रिशूलहु धारो।
रक्त पिपासु लगे बढ़ने दुखके महिषासुर को अब टारो।
ताण्डव से अरि रुण्डन मुण्डन को बरसा कर के रिपु मारो।
नाहर पे चढ़ भेष कराल बना कर ताप सभी तुम हारो।।

(2)

नेत्र विशाल हँसी अति मोहक तेज सुशोभित आनन भारी।
क्रोधित रूप प्रचण्ड महा अरि के हिय को दहलावन कारी।
हिंसक शोणित बीज उगे अरु पाप बढ़े सब ओर विकारी।
शोणित पी रिपु नाश करो पत भक्तन की रख लो महतारी।।

(3)

शुम्भ निशुम्भ हने तुमने धरणी दुख दूर सभी तुम कीन्हा।
त्राहि मची चहुँ ओर धरा पर रूप भयावह माँ तुम लीन्हा।
अष्ट भुजा अरु आयुध भीषण से रिपु नाशन माँ कर दीन्हा।
गावत वेद पुराण सभी यश जो वर माँगत देवत तीन्हा।।

मत्तगयंद सवैया छंद विधान -

मत्तगयंद सवैया छंद 23 वर्ण प्रति चरण का एक सम वर्ण वृत्त है। अन्य सभी सवैया छंदों की तरह इसकी रचना भी चार चरण में होती है और सभी चारों चरण एक ही तुकांतता के होने आवश्यक हैं।

यह सवैया भगण (211) पर आश्रित है, जिसकी 7 आवृत्ति और अंत में दो गुरु वर्ण प्रति चरण में रहते हैं। इसकी संरचना 211× 7 + 22 है।

(211 211 211 211 211 211 211 22)

सवैया छंद यति बंधनों में बंधे हुये नहीं होते हैं परंतु कोई चाहे तो लय की सुगमता के लिए इसके चरण में क्रमशः12 -11 वर्ण पर 2 यति खंड रख सकता है। चूंकि यह एक वर्णिक छंद है अतः इसमें गुरु के स्थान पर दो लघु वर्ण का प्रयोग करना अमान्य है।

वागीश्वरी सवैया छंद "दया की महिमा"

दया का महामन्त्र धारो मनों में, दया से सभी को लुभाते चलो।
न हो भेद दुर्भाव कैसा किसी से, सभी को गले से लगाते चलो।
दयाभूषणों से सभी प्राणियों के, उरों को सदा ही सजाते चलो।
सताओ न थोड़ा किसी जीव को भी, दया की सुधा को बहाते चलो।।

वागीश्वरी सवैया छंद विधान -

यह 23 वर्ण प्रति चरण का एक सम वर्ण वृत्त है। अन्य सभी सवैया छंदों की तरह इसकी रचना भी चार चरण में होती है और सभी चारों चरण एक ही तुकांतता के होने आवश्यक हैं।

यह सवैया यगण (122) पर आश्रित है, जिसकी 7 आवृत्ति तथा चरण के अंतमें लघु गुरु वर्ण जुड़ने से होती है। इसकी संरचना लघु गुरु गुरु × 7 + लघु गुरु है।

(122 122 122 122 122 122 122 12)

सवैया छंद यति बंधनों में बंधे हुये नहीं होते हैं। फिर भी इसके चरण में 12 - 11 वर्ण के 2 यति खंड रखने से लय की सुगमता रहती है। क्योंकि यह एक वर्णिक छंद है अतः इसमें गुरु के स्थान पर दो लघु वर्ण का प्रयोग करना अमान्य है।

वर्णिक छंद "कोष"

वर्णिक छंदों की विरासत हिन्दी को संस्कृत साहित्य से प्राप्त हुई है। वर्णिक छंदों का अपना विशिष्ट महत्व है जिनमें लघु गुरु के क्रम सहित वर्ण सुनिश्चित रहते हैं। जब वर्ण सुनिश्चित हैं तो मात्राऐं स्वयंमेव सुनिश्चित रहती हैं।

वर्णिक छंदों में दो से अधिक लघु वर्ण का एक साथ प्रयोग प्रचुरता से होता है। इन छंदों में श्रृंखलाबद्ध लघु वर्ण का प्रयोग रचना में विविधता लाने के लिये किया जाता है। मात्रिक छंदों में समकल और विषमकल का प्रचुर प्रयोग होता है। पर वर्णिक स्वरूप में कल के आधार पर मात्राओं में लोच संभव नहीं। क्योंकि इनमें ठीक प्रदत्त वर्णविन्यास के अनुसार रचना करना आवश्यक है। वर्णिक छंदों में इस कमी को लघु वर्णों के प्रयोग से दूर किया जाता है।

वर्णिक छंदों में जहाँ भी तीन लघु एक साथ आते हैं वे त्रिकल का काम करते हैं। इन्हें 'नकल' 12 के रूप में, तथा 'भया'नक ल'गे' 21 दोनों रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

चार लघु को भी आवश्यकतानुसार

- 22 - मधुरिम,
- 1 12 - खू'ब मधुर',
- 12 1 - 'मधुर ब'ड़ा,
- 1 2 1 - खू'ब मृदु ल'गे

आदि किसी भी रूप में लिया जा सकता है। जबकि दो गुरु का केवल 22 रूप - मीठा आदि ही संभव है।

1111*2 यह अठकल का काम करता है। जिसे 4+4, 3+3+2, 2+3+3 आदि अनेक रूप में तोड़ा जा सकता है।

शास्त्रों में मात्रिक छंदों की तरह ही वर्णिक छंदों को भी उन में प्रयुक्त वर्ण संख्याओं के आधार पर एक एक विशिष्ट नाम देकर वर्गीकृत किया गया है। 26 वर्ण प्रति पद तक के वर्णिक छंद सामान्य वर्ण वृत्त की श्रेणी में आते हैं तथा इससे अधिक के छंद दण्डक वर्णिक छंदों की श्रेणी में आते है।

मैंने 4 वर्ण से लेकर 26 वर्ण तक के कई वर्णिक छंद यहाँ विधान सहित दिये हैं।

4:- (प्रतिष्ठा वृत्त = प्रति पद/चरण 4 वर्ण)

1111 = हरि छंद	2111 = निसि छंद
1112 = सती छंद / तरणिजा छंद	2112 = कला छंद
1121 = पुंज छंद	2121 = धारि छंद
1122 = देवी छंद / रमा छंद	2122 = रंगी छंद
1211 = धर छंद / हरा छंद	2211 = कृष्ण छंद / वपु छंद
1212 = सुधी छंद	2212 = धरा छंद
1221 = उषा छंद / मुद्रा छंद	2221 = धार छंद / तारा छंद
1222 = क्रीड़ा छंद	2222 = कन्या छंद / तिन्ना छंद

5:- (सुप्रतिष्ठा वृत्त = प्रति पद/चरण 5 वर्ण)

11111 = यमक छंद / यम छंद	12122 = यशोदा छंद
11112 = करता छंद	21122 = पंक्ती छंद / हंस छंद
11121 = भजन छंद	22122 = हारी छंद / हारीत छंद
11211 = नायक छंद	22222 = सम्मोहा छंद
11212 = रति छंद	

6:- (गायत्री वृत्त = प्रति पद/चरण 6 वर्ण)

111*2 = दमन छंद	211 222 = अम्बा छंद
111 122 = शशिवदना छंद / चंडरसा छंद	212*2 = विमोहा छंद / जोहा छंद
112*2 = तिलका छंद / तिल्ला छंद	221 112 = वसुमती छंद
121 112 = अपरभा छंद	221 122 = तनुमध्या छंद / चौरस छंद
121*2 = शुभमाल छंद / मालती छंद	221*2 = मन्थान छंद / ज्योति छंद
122*2 = सोमराजी छंद / शंखनारी छंद	222*2 = विद्युल्लेखा छंद / शेषराज छंद
211*2 = राजीव छंद	

7:- (उष्णिक् वृत्त = प्रति पद/चरण 7 वर्ण)

111*2 2 = मधुमती छंद	211 1212 = धुनी छंद
111 1121 = करहंस छंद / वीरवर छंद	211*2 2 = तपी छंद
111 1211 = सुवास छंद	211 2212 = लीला छंद
111 2122 = मनोज्ञा छंद	212 1212 = समानिका छंद / रक्ता छंद
112*2 2 = सुमाला छंद	221 1222 = भक्ति छंद
112 2122 = हंसमाला छंद	221 2221 = सूर छंद
121 1122 = कुमारललिता छंद	222 1122 = मदलेखा छंद
121 2111 = शारदी छंद	222 2222 = शिष्या छंद / शीर्षा छंद

8:- (अनुष्टुप् वृत्त = प्रति पद/चरण 8 वर्ण)

111*2 11 = मलयज छंद	211 221 11 = मानवक्रीडा छंद
111*2 12 = कुसुम छंद	2112, 2112 = माणवक छंद
111*2 22 = तुंग छंद / तुरंग छंद	212 112 22 = गाथ छंद
111 112 12 = पद्म छंद / कमल छंद	2121*2 = मल्लिका छंद / समानी छंद
1112*2 = गजगति छंद	212*2 21 = लक्ष्मी छंद
112 111 12 = विमलजला छंद`	212*2 22 = पद्ममाला छंद
112 121 22 = ईश छंद / अनघ छंद	2211*2 = रामा छंद
112 211 22 = वितान छंद	221 212 12 = नराचिका छंद
1212*2 = प्रमाणिका छंद / नगस्वरूपिणी छंद	221 212 22 = विभा छंद
211*2 22 = चित्रपदा छंद	222 111 22 = हंसरुत छंद
211 212 11 = विपुला छंद	2221, 2221= वापी छंद
211 212 22 = विज्ञात छंद	2222, 2222 = विद्युन्माला छंद

9:- (वृहती वृत्त = प्रति पद/चरण 9 वर्ण)

111*2 112 = रतिपद छंद / कमला छंद / कुमुद छंद	121*2 122 = महर्षि छंद
111*2 222 = स्यामा छंद	121 122*2 = भुआल छंद
111*2 2, 22 = भुजंगशिशुसुता छंद / युक्ता छंद	211 122*2 = निवास छंद
111 112 122 = बिंब छंद	211*3 = शुभोदर छंद
111 121 122 = अमी छंद	211 222 112 = मणिमध्या छंद
111 121 212 = बुदबुद छंद	212, 111 112 = हलमुखी छंद

111 122 112 = सारंगिक छंद	212 111 212 = भद्रिका छंद
111 122*2 = श्याम छंद	212*3 = महालक्ष्मी छंद
111 221, 212 = कामना छंद	222 112*2 = रत्नकरा छंद / रत्नका छंद
112 121 212 = भुजंगसंगता छंद	222 211 112 = पाईता छंद / पवित्रा छंद
112 121 222 = विजात छंद	222 221 121 = वर्ष छंद

10:- (पंक्तिः वृत्त = प्रति पद/चरण 10 वर्ण)

11112, 11112 = अमृतगति छंद /त्वरितगति छंद	212 122 1212 = कामदा छंद
111 212, 1212 = मनोरमा छंद /सुन्दरी छंद	212*3 2 = बाला छंद
112*3 1 = गूजरी छंद	2211 112*2 = चन्द्रमुखी छंद
112*3 2 = मेघवितान छंद / वेगवती छंद / कीर्ति छंद	22, 112*2 12 = उपस्थिता छंद
112 121 1122 = सिंहनाद छंद	22, 112 221 12 = वामा छंद / सुसमा छंद
112 121 1212 = सयुत छंद / संयुक्ता छंद	2212 121*2 = सेवा छंद
211 111*2 2 = कुसुमसमुदिता छंद	2212, 121 122 = धरणी छंद
211*3 2 = सारवती छंद	222 111 1222 = कुबलयमाला छंद
211*2, 2222 = बिंदु छंद	22211, 112 22 = पणव छंद / पंडव छंद
21122, 21122 = चंपकमाला छंद /रुक्मवती छंद	222 112 1212 = शुद्ध विराट छंद
211 222 1212 = दीपकमाला छंद	222 211 1112 = हंसी छंद
211 222 2112 = पावक छंद	2222, 111 122 = मत्ता छंद
2121*2 22 = मयूरसारिणी छंद /मयूरी छंद	

11:- (त्रिष्टुप् वृत्त = प्रति पद/चरण 11 वर्ण)

111*3 12 = दमनक छंद	211*3 22 = दोधक छंद / बंधु छंद
1111, 111 1222 = वृत्ता छंद	211*2 21222 = रोचक छंद
111*2 11222 = रथपद छंद	211 221 111 21 = सांद्रपद छंद
111*2 21212 = सुभद्रिका छंद	21122, 111 122 = अनुकूला छंद / मौक्तिक माला छंद
11 112*3 = सुमुखी छंद	2121 112*2 2 = स्वागता छंद
111 1211, 2222 = बाधाहारी छंद	212 111 21212 = रथोद्धता छंद
111 122, 21122 = अनवसिता छंद	21212, 111 212 = द्रुता छंद
111 212*2 12 = इंदिरा छंद / राजहंसी छंद	2121*2 212 = श्येनिका छंद
11122 212*2 = शिवा छंद	2122, 212*2 2 = शाली छंद
11211, 112 222 = हित छंद	2 211*3 2 = मोटनक छंद
112*3 11 = शील छंद	22 112*2 122 = उपस्थिता छंद
112*2, 11212 = उपचित्र छंद	22121 112*2 = चपला छंद
112*3 22 = गगन छंद	221*2 12122 = इन्द्रवज्रा छंद
1122*2 112 = सायक छंद	221*2, 22122 = विध्वंकमाला छंद / ग्राहि छंद
112 222 111 12 = विमला छंद	22211, 111 122 = माता छंद
121 112, 22122 = उपस्थित छंद / शिखंडिन छंद	222 112, 11112 = मयतनया छंद
1212*2 122 = विलासिनी छंद	2222, 111*2 2 = भ्रमरविलासिता छंद
121 221 12122 = उपेन्द्रवज्रा छंद	2222, 112 2122 = वातोर्मि छंद
122*3 12 = भुजंगी छंद	2222, 212*2 2 = शालिनी छंद
122 2122, 2122 = सुमेरु छंद	222*2, 12212 = भारती छंद
211*3 12 = कली छंद	22222, 222*2 = माली छंद

12:- (जगती वृत्त = प्रति पद/चरण 12 वर्ण)

111*2, 111*2 = तरलनयन छंद	121*4 = मौक्तिकदाम छंद
111*2 2, 11212 = उज्ज्वला छंद	121*3 122 = धारी छंद
111*2 212 121 = निवास छंद	121 221 121 212 = वंशस्थ छंद
111*2 21, 2212 = मंदाकिनी छंद / चंचलाक्षिका छंद	122*3 121 = शैल छंद
111*2 222 112 = राधारमण छंद	122*4 = भुजंगप्रयात छंद
111*2 22, 2122 = पुट छंद	1222*2 1221 = शास्त्र छंद
111*2 222 212 = ललित छंद / तत छंद	211 112, 111 122 = मदनारी छंद
111 112 121 212 = वासना छंद	211 112 121 112 = दान छंद
111 112 122 112 = तारिणी छंद	2111*2 2112 = सौरभ छंद
111 1122, 21121 = साधु छंद	211*4 = मोदक छंद
11 112*3 1 = मोतिमहार छंद	21122, 111*2 2 = पवन छंद
11 112*3 2 = तामरस छंद	21122, 211*2 2 = ललना छंद
111 121, 121 212 = वरतनु छंद	211 222, 112 222 = कांतोत्पीड़ा छंद
111 1211, 21212 = मालती छंद /यमुना छंद	212 111 211 112 = चंद्रवर्त्म छंद
111 12121, 1122 = नवमालिनी छंद / नवमालिका छंद	212*4 = स्त्रग्विणी छंद
111 122 111 121 = रमेश छंद	2122*2 2121 = केहरी छंद
111 122, 111 122 = कुसुमविचित्रा छंद	221 111 211 112 = सुरसरि छंद
11112 211*2 2 = नभ छंद	22 112*3 2 = गौरी छंद
111 122, 211 112 = मानस छंद	221 122, 221 122 = मणिमाला छंद
1112 111*2 22 = द्रुतपद छंद	221 211 121 212 = ललिता छंद
1112*2 1122 = मुरारी छंद	2212, 1122, 1211 = बनमाली छंद

1112, 1112, 1212 = प्रियवंदा छंद	221 2112, 22121 = भीम छंद
1112 112*2 12 = द्रुतविलंबित छंद /सुन्दरी छंद	221*2 121 212 = इंद्रवंशा छंद
111 212 111 122 = सुमति छंद	221*4 = सारंग छंद / मैनावली छंद
1112, 211*2 22 = श्रीपद छंद	221 2222, 221 22 = वाहिनी छंद
112 111 122 112 = गिरिधारी छंद	2222, 111 122 22 = जलधरमाला छंद
112*4 = तोटक छंद	222 211 212 122 = पुंडरीक छंद
112 121 112*2 = प्रमिताक्षरा छंद	22222, 212*2 2 = वैश्वदेवी छंद
1122, 111*2 12 = रति छंद	2222*2, 2112 = भूमिसुता छंद
121 112, 121 112 = जलोद्धतगति छंद	222*4 = विद्याधारी छंद

13:- (अति जगती वृत्त = प्रति पद/चरण 13 वर्ण)

111*2 112*2 2 = चंडी छंद	122*4 2 = कंदुक छंद
111*2 121 2212 = क्षमा छंद	12222, 211 111 12 = सुरेन्द्र छंद
111*2 212, 2122 = पुष्पमाला छंद	122 222, 212*2 2 = चंचरीकावली छंद
111*2 2, 212*2 = चंद्रिका छंद /उत्पलिनी छंद	211 1111 211*2 = पंकजवाटिका छंद / कंजावलि छंद
111 112, 212*2 2 = चन्द्ररेखा छंद	2121*3 2 = राग छंद
111 121*2 2122 = मृगेन्द्रमुख छंद	2122*2, 21222 = राधा छंद
112*4 2 = तारक छंद	221 122, 122 2222 = त्राता छंद
112 121 112*2 2 = कलहंस छंद / सिंहनी छंद	2212, 111 121 212 = प्रभावती छंद / रुचि छंद
(112 121)*2 2 = मंजुभाषिणी छंद / सुनंदिनी छंद / कनकप्रभा छंद	222, 111 121 2122 = प्रहर्षिणी छंद
1212, 111 121 212 = रुचिरा छंद	2222, 2112*2 2 = माया छंद / मत्तमयूर छंद
122*4 1 = कंद छंद	22222, 122, 22222 = विलासी छंद

14:- (शर्करी वृत्त = प्रति पद/चरण 14 वर्ण)

111*2 11, 111 122 = सुपवित्रा छंद	1122*2, 111 122 = प्रतिभा छंद
111*2 2, 111*2 2 = प्रहरणकलिका छंद	1212*3 12 = अनंद छंद
111*2 2, 211 2122 = नदी छंद	211 1111, 111*2 2 = चक्र छंद
111*2 2, 212*2 2 = नान्दीमुखी छंद	2111*3 22 = इंदुवदना छंद
111*2 2, 121*2 2 = अपराजिता छंद	2211*2 2, 21122 = बिहारी छंद
111 12121 112*2 = प्रमदा छंद	22121 112*2 122 = वसंततिलका छंद
111 12121, 112 122 = कुमारी छंद	221 211 12, 112 121 = मुकुंद छंद / हरिलीला छंद
(111 212)*2 12 = ललितकेसर छंद / केसर छंद	221 2122, 221 2122 = दिगपाल छंद
112*2 121, 21212 = मंगली छंद	22211*2 1122 = रेवा छंद
112*4 11 = मनोरम छंद	222 1122, 222 1122 = अलोला छंद
11212, 111 121 212 = सुदर्शना छंद	2222, 111*2 2222 = मध्यक्षामा छंद 2222 111*2 2222 = हंसश्येनी छंद
(112 121)*2 22 = प्रबोधनी छंद	2222 111*2 2212 = चन्द्रौरसा छंद
11212, 111 212*2 = मंजरी छंद / वसुधा छंद	22222 111*2 222 = असबंधा छंद 22222, 111*2 222 = असंबाधा छंद (छंद प्रभाकर)
1122, 111*2 2222 = कुटिल छंद	222 221, 111 222 22 = वासन्ती छंद

15:- (अतिशर्करी वृत्त = प्रति पद/चरण 15 वर्ण)

111*2, 111*2 112 = शशिकला छंद / चन्द्रावती छंद / मणिगुण छंद	2111*3 212 = निशिपाल छंद
111*2 22, 212*2 2 = मालिनी छंद	21122, 111 122, 2221 = निश्चल छंद
111*2 22, 121*2 2 = उपमालिनी छंद	211 221 1112, 21122 = दीपक छंद
111 112 111 212*2 = विपिनतिलका छंद	211 222 112, 112*2 = भाम छंद
111 121 211 121 212 = प्रभद्रिका छंद / सुखेलक छंद	2121 112*3 12 = रमणीयक छंद
11112, 121 112 1212 = अतिरेखा छंद	2121*3 212 = चामर छंद
1121*2 221 1121 = दीपशिखा छंद	212*2 2, 221 121 22 = चन्द्रकांता छंद
112*5 = नलिनी छंद / भ्रमरावली छंद	2122*3 212 = सीता छंद
11212, 111*2 1122 = एला छंद	2212*3 221 = गीता छंद
112 121*2 211 212 = मनहंस छंद / रणहंस छंद	221 12121, 211 2212 = कुंज छंद
112 122 112, 112 122 = ऋषभ छंद	222 2122, 221*2 22 = चंद्रलेखा छंद
112 2112, 2112*2 = मोहिनी छंद	22222, 112 122 1121 = धाम छंद
112 2112, 211*2 22 = मंगल छंद	222*2 22, 212*2 2 = चित्रा छंद
211 111 12, 112 1112 = पावन छंद	222*2 22, 222*2 2 = सारंगी छंद / कामक्रीड़ा छंद

16:- (अथाष्टिः वृत्त = प्रति पद/चरण 16 वर्ण)

111*5 1 = अचलधृति छंद	2121*4 = चंचला छंद / चित्र छंद
111 121 211 121 2122 = वाणिनी छंद	211*5 2 = नील छंद / अश्वगति छंद
111 121 2111 212*2 = गरुड़रुत छंद	211 112 22, 222 11112 = चकिता छंद
111 121 2122, 112*2 = मणिकल्पलता छंद	211 2121, 111*2 112 = ऋषभ गजविलसिता छंद
1112, 111 21121, 1212 = मंगलमंगना छंद	211 212 111 212 1112 = धीरललिता छंद
112 111*2 11, 11122 = रतिलेखा छंद	211 212 122, 111*2 2 = वरयुवती छंद
121*2, 211*3 2 = घनश्याम छंद	222 12122, 112 12112 = प्रीतिमाला छंद
122 222, 1111 122*2 = प्रवरललिता छंद	2222, 111 112, 221 112 = मदनललिता छंद

17:- (अथात्यष्टिः वृत्त = प्रति पद/चरण 17 वर्ण)

111*2 2, 111 122, 1212 = घनमयूर छंद	1212*4 1 = भालचंद्र छंद
111 112, 2222, 121*2 2= हरिणी छंद	1222, 111 112, 121*2 2 = कांता छंद
111 112 121, 112 12212 = मालाधर छंद	122 222, 111 112 21112 = शिखरिणी छंद
111 121 2111, 212 1112 = समुदविलासिनी छंद	211 212 1112, 111*2 2 = वंशपत्रपतिता छंद
111 12121, 112*3 = नर्दटक छंद / नर्कुटक छंद	21122, 21122, 211 2221 = शूर छंद
111 1212, 111 211, 2112 = कोकिल छंद	212 112*4 12 = पुटभेद छंद
111 1221, 121 111*2 2 = रसना छंद	2222, 111 112, 121*2 2 = भाराक्रान्ता छंद
112*2 1212, 111 2122 = अतिशायिनी छंद	2222, 111 112, 212*2 2 = मंदाक्रान्ता छंद
112*3 1, 121*2 2 = सारिका छंद	2222, 111 112, 221*2 2 = हारिणी छंद
11222, 21122, 222*2 2 = तरंग छंद	222*2 211, 221 12222 = मंजारी छंद
121 11212, 111 212*2 = पृथ्वी छंद	

18 :- (अथधृतिः वृत्त = प्रति पद/चरण 18 वर्ण)

1111, 111 121 122, 21122 = पंकजमुक्ता छंद	211*5 112 = तीव्र छंद
111*2 2122, 112 12212 = लता छंद	211*3 21, 121 1112 = मणिमाला छंद
111*2 212, 212*3 = नाराच छंद /महामालिका छंद	211 212, 111*3 112 = भ्रमरपदक छंद
111 12112, 111 122 1121 = अनुराग छंद	21211*3 212 = हरनर्तक छंद
111 121 21112, 121 2212 = नंदन छंद	21211 212, 11212*2 = चंचरी छंद / चर्चरी छंद) 21211 212, 11212, 11212 = हरनर्तन छंद
111 122, 2222, 222 11222 = प्रज्ञा छंद	221 211 212, 112 121*2 = शारद छंद
111 212 1122, 221 11222 = मान छंद	221 111 212, 212*3 = लालसा छंद
112*3 1, 211 11212 = केतकी छंद	222 11212, 11212, 11212 = हरिणिप्लुता छंद
112 121 122, 112 121 121 = सिद्धिका छंद	222 112 121 112, 221 112 = शार्दूल ललिता छंद 222 112 121 112, 212 222 = शार्दूल छंद
12122, 121 112, 211 2221 = अचल छंद	2222, 111*2 2, 212*2 2 = चित्रलेखा छंद 2222, 111*2 2, 221*2 2 = केसर छंद 2222, 111*2 2, 121*2 2 = चला छंद
122 222, 111 112, 221 112 = सुधा छंद	22222, 111 112, 212*2 2 = कुसुमित लता वेल्लिता छंद 22222, 221 122, 212*2 2 = सिंहविस्फूर्जिता छंद
122*6 = महामोदकारी छंद	222*2 211, 222 112 222 = मंजीरा छंद
21111*2, 21111 212 = हीर छंद	

19:- (अथातिधृतिः वृत्त = प्रति पद/चरण 19 वर्ण)

11212*2 11, 212 1121 = मणिमाल छंद	121 112, 12111, 212 11122 = रतिलीला छंद
112 111 122, 111 122 1112 = तरल छंद	211 111 121, 2111 211*2 = रसाल छंद
11222, 112 2211, 222*2 2 = शम्भू छंद	22, 211 2222, 112*2 2221 = गिरिजा छंद
12111, 12111, 12111, 1212 = वरूथिनी छंद	222 112 121 112, 221*2 2 = शार्दूलविक्रीडित छंद
121 11212, 1112, 221 2112 = समुद्रतता छंद	222 2122, 111 112, 221 112 = सुमधुरा छंद
122 222, 111 112, 212*2 2 = मेघविस्फूर्जिता छंद / विस्मिता छंद 122 222, 111 112, 221*2 2 = छाया छंद 122 222, 111 112, 121*2 2 = मकरंदिका छंद	222 2122, 111*2 2, 21112 = सुरसा छंद
	22222, 111*2 2, 212*2 2 = फुल्लदाम छंद 22222, 111*2 2, 221*2 2 = बिम्ब छंद

20:- (अथकृतिः वृत्त = प्रति पद/चरण 20 वर्ण)

111*4, 111*2 21 = भृंग छंद	211, 111 122, 111*2 21212 = दीपिकाशिखा छंद
11112, 11112, 11112, 11112 = मदकलनी छंद	2121*5 = वृत्त छंद
11212*2 11, 212 11212 = गीतिका छंद / मुनिशेखर छंद	2211*2 22, 112 121 2221 = सरिता छंद
112 211 212 1112, 221*2 2 = मत्तेभविक्रीडित छंद	222 2122, 111*2 2, 221 112 = सुवदना छंद
122 222, 111*2 2, 212*2 2 = शोभा छंद	222 2122, 111 112, 212*2 2 = सुवंशा छंद

21:- (अथप्रकृतिः वृत्त = प्रति पद/चरण 21 वर्ण)

111 12122, 21122, 211*2 21 = हरिहर छंद	211 212 111*2 1, 212 211 22 = नरेन्द्र छंद / समुच्चय छंद
21111*2, 21111, 211 112 = धर्म छंद	211*3 2, 112 111*2 22 = मनविश्राम छंद
211*4, 211*2 222 = अहि छंद	222 2122, 111*2 2, 212*2 2 = स्त्रग्धरा छंद

22:- (अथsकृतिः वृत्त = प्रति पद/चरण 22 वर्ण)

112*2 1212, 112 211 212 122 = वसन्तमालिका छंद	222 112 212, 11222, 112 111 12 = लालित्य छंद
112 12122, 111*2 2, 212*2 2 = महास्त्रग्धरा छंद	222*2 22, 111*4 22 = हंसी छंद
2112, 121 112, 121 112, 121 112 = भद्रक छंद	

23:- (अथविकृतिः वृत्त = प्रति पद/चरण 23 वर्ण)

1111 211*3, 211*3 2 = कनकमंजरी छंद	111 121 21112, (121 112)*2 = आद्रितनया छंद / अश्वललित छंद
1111 211*6 2 = शैलसुता छंद	222*2 22, 11111, 111*3 2 = मत्ताक्रीड़ा छंद

24:- (अथसंस्कृतिः वृत्त = प्रति पद/चरण 24 वर्ण)

21122, 111*2 2, 211*2 111 122 = तन्वी छंद

25:- (अथतिकृतिः वृत्त = प्रति पद/चरण 25 वर्ण)

21122, 21122, 111*2 11, 111*2 2 = क्रौंच छंद

26:- (अथोत्कृतिः वृत्त = प्रति पद/चरण 26 वर्ण)

111 122, 111 122, 111*2 11, 111 122 = मकरन्द छंद	222*2 22, 111*3 12, 121*2 2 = भुजंगविजृम्भित छंद
211 1111, 211 1111, 211 1111, 211 22 = रंजन छंद	

31:-

2121*4, 2121*3 212 = कलाधर छंद / कलाधर घनाक्षरी

32:-

1212*8 = अनंगशेखर छंद

अर्ध समपद वर्ण वृत्त:-

जैसे मात्रिक छंदों में दोहा, सोरठा, उल्लाला आदि अर्ध समपद मात्रिक छंद हैं वैसे ही वर्ण वृत्त में भी अर्ध समपद वर्ण वृत्त होते हैं। अर्धसम छंदों के पद के चरणों का विधान एक दूसरे से अलग रहता है। जैसे दोहा में प्रथम चरण में 13 मात्राएँ रहती हैं और दूसरे चरण में 11 मात्राएँ रहती हैं। अर्ध समपद छंद द्विपदी के रूप में लिखे जाते हैं और मात्रिक छंदों में दोनों चरण अर्ध विराम से एक दूसरे से अलग रहते हैं जबकि वर्णिक छंदों के चरण पूर्ण विराम चिन्ह से। वर्ण वृत्त के प्रथम चरण और द्वितीय चरण के अंत्याक्षर एक समान हों तो इन दोनों चरण की तुक मिलाई जाती है अन्यथा चरण एक और तीन तथा चरण दो और चार की तुक मिलाई जाती है।

111*2 21212, 1111 211 21212 = अपरवक्त्र छंद (11, 12 वर्ण)
111*2 212 122, 1111 211 212 122 = पुष्पिताग्र छंद (12, 13 वर्ण)
112*2 1122, 2 112*2 1122 = वेगवती छंद (10, 11 वर्ण)
112*2 1212, 1122 112 1212 = वियोगिनी छंद / वैतालीय छंद (10, 11 वर्ण)
112*3 12, 1112 112*2 12 = हरिणप्लुता छंद (11, 12 वर्ण)
112121 1122, 2 112121 1122 = केतुमती छंद (10, 11 वर्ण)
211*3 22, 1111 211*2 22 = द्रुतमध्या छंद (11, 12 वर्ण)
2211 212 122, 2 2211 212 122 = भद्रविराट छंद (10, 11 वर्ण)
221*2 12122, 121 221 12122 = आख्यानिकी छंद (11, 11 वर्ण)
112*3 12, 211*3 22 = उपचित्र छंद (11, 11 वर्ण)
2121*3, 1212*3 2 = यवमती छंद (12, 13 वर्ण)

यवमती छंद "पुकार"

"शूलधारिणी महेश्वरी प्रचंड। निशुंभ और शुंभ की विनाशकारी।।
शत्रु को करो विदार खंड खंड। समस्त भक्त की सदैव पीड़ हारी।।

मात अंबिका धरो कराल वेश। सभी यहाँ निशंक आज आततायी।।
माँ पुकारता तुझे समस्त देश। सदैव तू रही अपार शांतिदायी।।"

वर्ण विषम छंद -

इसमें छंद के चारों पद विषम होते हैं। जिन पद का अंत समान होता है, उनकी तुक मिला दी जाती है। रचना चतुष्पदी के रूप में होती है।

112 121 1121,
1111 121 212,
2121 112*2,
(112 121)*2 2 = सौरभक छंद

सौरभक छंद "चाह"

"यह चाह एक मन माँहि।
हृदय बस कृष्ण में रहे।।
नित्य जीभ घनश्याम कहे।
मन श्याम नाम रस-धार में बहे।।"

222 1121 212 1122,
11211 11212 122,
(111*2 112)*2,
1111*2 112*2 2 = वर्द्धमान छंद

बासुदेव अग्रवाल 'नमन' ©
तिनसुकिया